अलीवर्दीखांके दरबारमें हाज़िर रहने लगा। एक दिन अर्ज़ की कि, जहांपनाह! राजा रामकान्तने पचीस लाख रुपया घरमें जमा किया और दो लाखका सरपेच मोल लिया है। पर आपका रुपया अदा नहीं करता, बाक़ी डालता चला आता है और सरकारी मालगुज़ारीको बातोंमें उड़ाना चाहता है। नवाबने पूछा कि, तू पचीस लाख रुपयेका उसके घरमें निशान दे सकेगा। उसने कहा, बेशक। नवाबने फिर पूछा कि राजा रामजीवनके कुटुम्बमें और कोई भी राजके लायक़ है? उसने कहा, उनका भतीजा देवीप्रसाद बड़ा ईमानदार ज़मीन्दारीके काममें होशियार है। नवाबने उसीदम हुक्म दिया कि, फौज जावे और रामकान्तका घर-बार लूट लेवे और देवीप्रसाद उसकी जगह राजा होवे। मुसल्मानोंकी अमलदारीमें प्रायः ऐसाही अन्धेर मचा करता था। रामकान्त महलोंमें था। सुना कि नवाबकी फ़ौज घरमें घुस आयी और लूटकर रही है। हड़बड़ीके साथ रानी भवानीको साथ ले पनालेकी राह बाहर निकला। धन द्रव्यका ज़रा भी मोह न किया। रानी भवानी एक तो रानी, दूसरे गर्भवती। पावों कभी चली थी। ज्यों त्यों पैदली उठती राम-कान्तके साथ गंगाके किनारे तक पहुंची। यहांसे एक छोटीसी नावपर बैठकर दोनों मुर्शिदाबाद आये और जगत सेठकी शरण लेकर एक छोटीसी हवेलीमें रहने लगे। विपतकी तकलीफ़ सहते-सहते बहुत दिन बीते। एक दिन

बक्शी और देवीप्रसादको दरबारसे निकलवा दिया। तबसे राजा रामकान्त दयारामको बहुत मानता रहा और सोलह बरस राज्य करके परलोकको सिधारा। रानी भवानीके लड़का कोई न था—दो हुए थे, सो दोनों बालकपनमें ही मर गये थे। सारा काम ज़मींदारीका आप देखती थी और दान और धर्ममें बड़े राजाओंको मात करती थी। एक लाख अस्सी हज़ार रुपया साल तो नक़द पण्डित और फ़क़ीरोंको मुक़र्रर था और प्रायः पांच लाख बिघेके लोगोंको धरती माफ़ कर दी थी। घाट, धर्मशाला आदिके सिवाय तीन सौ हवेली बनारसमें मोल ली थी कि जो लोग वहाँ काशीवास करनेको आवें, बिना किराये उनमें रहा करें। बहुतेरे आदमी उसके देशके जो काशीमें रहनेको आते मकानके सिवाय जन्म भर परिवार समेत खाने पहननेको भी देती। पञ्चकोशी-की सारी सड़कमें थोड़ी-थोड़ी दूरपर धर्मके दौहे बनवाकर और कुएं खोदवाकर पेड़ लगवा दिये थे। कई जगह धर्म-शाला बनवाके तालाब भी तैयार कर दिये थे। सदावर्त जारी था। काशीमें आठ मन भीगा चना और पचीस मन चावल नित भूखोंको बांटा जाता था और एक सौ आठ स्त्री-पुरुष इच्छा-भोजन करते थे। जब रानी भवानी काशीमें आयी तो कहते हैं सत्रह सौ नाव उसके साथ थीं। उसका रहना अक्सर ज़िले मुर्शिदाबादमें गंगाके तीर बड़नगरमें होता था और यह सोचकर कि सब जगहमें सब समयमें भूखे नंगे उस तक

नहीं पहुँच सकते और न वह उनको दान दे सकती थीं—हुक्म था कि जब कोई भूखे-नंगे आवे तो दो रुपये तक पोद्दार, पाँच रुपये तक खजानची, दस रुपये तक मुत्सद्दी और सौ रुपये तक दीवान बिना पूछे दे दें। जब सौ रुपये से अधिक देना होतो रानीसे पूछें। जमींदारी भरमें ब्राह्मणकी कन्याका विवाह-खर्च रानीकी सरकारसे दिया जाता था। नवरात्रमें दो हजार वस्त्र सधवा और कुमारियोंको बँटता और उसके साथ सोनेकी एक-एक नथ भी दी जाती और पचास हजार रुपया पण्डितोंको मिलता। रोगियोंको देखनेको आठ वैद्य नौकर थे—वे जमींदारी भरमें गाँव-गाँव दवा लेकर घूमा करते। बीमारोंकी सेवाको उनके साथ नौकर भी रहा करते। रानी भवानीकी दान-धर्ममें
इसी बातसे मालूम होजायगी। अबतक एक
आमदनी आनेमें देर हुई तो आपने हुक्म
जो कुछ गहना है बेच डालो और
देनेको कहा है तुरन्त दे दो, कहते हैं कि
रुपयेको बिका और
सो भी पूरा न पड़ा, तब अपने गहने
जिसमें जो देनेको कहा था वह वचन
चार घड़ी रात रहते उठती थीं और
करतीं और धर्मशास्त्रका श्रवण करतीं।
करके अपने हाथसे रसोई बनातीं

खिलाके तब आप भोजन करती। फिर दिवानखानेमें कुशासनपर बैठकर पान सोपारी खाती और जो कुछ कारदारोंको आज्ञा देनी होती सो उन्हें लिखवा देती, तीसरे पहरको धर्मशास्त्र सुनती। दो घड़ी दिन रहे कारदार लोग कागज़ दस्तख़त करानेको लाते। रातको फिर चार घड़ी जप करती तब कुछ भोजन करके डेढ़ पहर रात तक राज-काजकी सुध लेती और दरबार करती। बत्तीस वर्षकी अवस्थामें विधवा हुई थी और उन्नासी वर्षकी अवस्थामें परलोकको सिधारी पर नियम उसका कभी नहीं टूटा।

प्रश्न

(१) रानी भवानीका जीवनचरित्र संक्षेपमें लिखो।

(२) इसलाम खाँ कौन था? उसने क्यों राजा रामकान्तका राज छिनवा लिया और फिर दिलवा दिया?

(३) रानी भवानीकी दिनचर्या लिखो। उसकी दिनचर्यामें क्या बात मुख्य थी?

ध्वनि तव करती वे क्या न निस्सार-सी तू।
जय पिक बतलाती शब्दकी चातुरी तू॥

(४)

सरस उपवनोंमें वाटिकामें कभी तू।
गिरि-सरित तटोंके प्रान्तमें सर्वदा ही॥
सुरभित हरियाली हो जहाँ दीखती तू।
सुमधुर मतवाली कूकको कूजती तू॥

(५)

प्रिय-विरह दशामें क्या कहीं जा छिपाती?
सुललित वह वानी भी नहीं तू सुनाती॥
सच कह, वह बातें क्या नहीं याद आतीं?
"परभृत" वह तेरा नाम भी भूल जाती॥

(६)

कविजन गुण तेरे नित्य गाते तथापि,
अति परिचय से तू हो न फीकी कदापि॥
बस अधिक कहें क्या? मान काफी यही तू।
अनुपम गुणवाली भाग्यशाली बड़ी तू॥

प्रश्न

(१) नीचे लिखे वाक्यको शुद्ध करो :—
"तव पिक करती तू शब्द प्रारम्भ तेरा।"
(२) कोयल किस ऋतुमें प्रायः किस समय बोलती है?
(३) कोयलको 'परभृत' क्यों कहते हैं?
(४) पहले और पाँचवें छन्दका अर्थ करो।

अमुक मनुष्य कैसा है, यह बात इससे नहीं जानी जा सकती कि वह क्या कहता या कौन-सा काम करता है। इस बातको जाननेके लिए यह देखना चाहिए कि वह मनुष्य किसी कामको किस रीतिसे करता या कहता है। उसकी करने या कहने की रीतिसे उसके चरित्रका, उसके शीलका, पूर्णतया पता लग सकता है। कोई मनुष्य जब कुछ कहता या करता है, तब उसके बोलने, ताकने, हिलने, डोलने तथा अन्य चेष्टाओंसे उसका आन्तरिक और स्वाभाविक भाव आपही आप प्रकट हो जाता है। कोई मनुष्य धनकी सहायतामात्रसे उतना प्रसन्न न होगा जितना उस सज्जनतासे होगा जो उसके साथ धन देते समय दिखलायी जायगी। यदि किसीको कठोर वचनके साथ कुछ द्रव्य दिया जाय तो वह कभी प्रसन्न नहीं होगा। इससे स्पष्ट है कि द्रव्य उसकी प्रसन्नता तथा कृतज्ञताका उतना बड़ा कारण नहीं है जितना द्रव्य देनेका ढंग है। यहाँ तक देखा गया है कि यदि हम किसी मनुष्यकी इच्छाको पूर्ण न भी करें, पर उसे नम्रता पूर्वक टाल दें तो वह बुरा नहीं मानता।

शीलवान् मनुष्यमें यह विशेष गुण होता है कि वह स्वयं प्रफुल्लित रहकर अपने साथियोंको भी प्रफुल्लित बनाये रखता है। नम्रता और सहिष्णुता शीलके प्रधान अंग हैं। सच्चा शीलवान् और सत्पुरुष वही है जो दूसरोंकी छोटी-छोटी बातों और नाममात्रके अपराधोंको उदारता पूर्वक क्षमा कर

अमुक मनुष्य कैसा है, यह बात इससे नहीं जानी जा सकती कि वह क्या कहता या कौन-सा काम करता है। इस बातको जाननेके लिए यह देखना चाहिए कि वह मनुष्य किसी कामको किस रीतिसे करता या कहता है। उसकी करने या कहने की रीतिसे उसके चरित्रका, उसके शीलका, पूर्णतया पता लग सकता है। कोई मनुष्य जब कुछ कहता या करता है, तब उसके बोलने, ताकने, हिलने, डोलने तथा अन्य चेष्टाओंसे उसका आन्तरिक और स्वाभाविक भाव आपही आप प्रकट हो जाता है। कोई मनुष्य धनकी सहायतामात्रसे उतना प्रसन्न न होगा जितना उस सज्जनतासे होगा जो उसके साथ धन देते समय दिखलायी जायगी। यदि किसीको कठोर वचनके साथ कुछ द्रव्य दिया जाय तो वह कभी प्रसन्न नहीं होगा। इससे स्पष्ट है कि द्रव्य उसकी प्रसन्नता तथा कृतज्ञताका उतना बड़ा कारण नहीं है जितना द्रव्य देनेका ढंग है। यहाँ तक देखा गया है कि यदि हम किसी मनुष्यकी इच्छाको पूर्ण न भी करें, पर उसे नम्रता पूर्वक टाल दें तो वह बुरा नहीं मानता।

शीलवान् मनुष्यमें यह विशेष गुण होता है कि वह स्वयं प्रफुल्लित रहकर अपने साथियोंको भी प्रफुल्लित बनाये रखता है। नम्रता और सहिष्णुता शीलके प्रधान अंग हैं। सच्चा शीलवान् और सत्पुरुष वही है जो दूसरोंकी छोटी-छोटी बातों और नासमझीके अपराधोंको उदारता पूर्वक क्षमा कर

जो मनुष्यके शीलको अच्छा नहीं प्रकट करतीं। जो मनुष्य अपना हित चाहता है, उसे इनसे सदैव बचते रहनेका प्रयत्न करना चाहिए।

उत्तम शील किसी व्यक्ति विशेषके लिए ही आवश्यक नहीं है। बल्कि यह एक ऐसा अमूल्य गुण है जिसके बिना मनुष्य किसी भी व्यवसायमें या किसी भी प्रकारकी जीवन-यात्रामें सुखी और सफल मनोरथ नहीं हो सकता। संसारमें ऐसे बहुतसे कुरूप, धनहीन और विद्याहीन मनुष्य होगये हैं जो केवल शीलवान् और सदाचारी होनेके कारण इतिहासके पृष्ठोंको अलंकृत करके अपना नाम अजर-अमर कर गये हैं। माननीय मिस्टर गोखलेके विषयमें कहा जा सकता है कि वे लोगोंको अपनी उत्तम वक्तृत्व-शक्ति और विद्वत्तासे जितना प्रसन्न करते थे उससे कहीं अधिक वे उन लोगोंको अपने शीलसे प्रसन्न किया करते थे और अपने विपक्षकी ओर झुका लेते थे। जस्टिस रानाडेमें इतनी शक्ति थी कि वे कट्टरसे कट्टर अपराधीसे भी उसका अपराध स्वीकार करा-लिया करते थे। डॉ० एन० ताता ऐसे कार्य-कुशल हो गये हैं कि उनको देखते ही उनकी कम्पनीके नौकरोंमें कार्य करनेकी स्फूर्ति आजाया करती थी। सर जमसेदजी यद्यपि पहले निर्धन व्यवसायी थे तथापि वे अपने मधुर भाषण और अनुकरणीय शीलके कारण अपार सम्पत्तिके स्वामी होगये हैं। ऐसे और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं। इन समस्त

उसके सांसारिक और पारलौकिक कल्याणका मुख्य साधन है। सच्चे शीलकी सहायतासे ही मनुष्यको धर्म, यश, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, ज्ञान, वैराग्य आदि सब गुणोंकी प्राप्ति होती है।

सारांश यही है कि जीवन-संग्राममें सफल-मनोरथ होनेके लिए शील ऐसा उपाय है जो प्रत्येक मनुष्यके स्वाधीन है। यथार्थमें शीलवान् होना अपने ही ऊपर अवलम्बित है। शीलवान् मनुष्यको अपने बाह्य आचरण तथा आन्तरिक मनोभावोंपर भी ध्यान देना चाहिए। जिस प्रकार प्रसन्नता, नम्रता, सहिष्णुता, उदारता, आदि उच्च भाव आवश्यक हैं उसी प्रकार किसीकी अनुचित हँसी न करना, ऐसी छोटी-छोटी बातें भी आवश्यक हैं। शील ही मनुष्यका सच्चा जीवन-चरित्र है। इसका अभ्यास छात्रावस्थासे ही होना चाहिए। बड़ी आयुमें शीलका बदलना कष्ट साध्य और कभी-कभी तो असम्भव भी हो जाता है।

प्रश्न

(१) शीलवान् मनुष्यमें क्या विशेषता होती है?
(२) उत्तम शील मनुष्यका किस प्रकार सहायक होता है?
(३) मनुष्यके शीलमें कौन-कौन बातें बाधा डालती हैं?
(४) कुछ ऐसे शीलवान् पुरुषोंका वृत्तान्त कहो जो अपने शीलके कारण प्रसिद्ध हुए हैं।
(५) सज्जन, उज्ज्वल, मनोरथ, सारांश, सुखार्थ, शब्दोंमें सन्धिके टुकड़े करो।

(३)

ऋषि, मुनि, वीर, व्रती, ब्रह्मचारी,
साधु, सती, सम्राट, सुखारी,
शिल्पी, सुकवि, गुणी, नर, नारी,
सबका जन्म स्थान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

(४)

राम कृष्णने वीर बनाकर,
और शिवाजीने अपनाकर,
फिर प्रतापने प्राण गँवाकर,
जीवन किया प्रदान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

(५)

बहे समुन्नतिकी ध्रुव धारा,
चमके सिर सौभाग्य-सितारा,
धर्म-कर्म दोनोंके द्वारा,
हो सुर लोक समान,
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान॥

प्रश्न

(१) इस पद्यके आशयको संक्षेपमें वर्णन करो।
(२) शिवाजी और प्रतापके सम्बन्धमें तुम क्या जानते हो?
(३) दूसरे और चौथे पदका अर्थ समझाओ।

पेश न गयी, और सुख और संतोषका सुन्दर संसार पापकी कालो छायासे सुरक्षित रहा।

परमात्माने अपने जीवको यह दशा देखी और प्रसन्न हुआ।

(२)

फिर कालके पश्चात् शैतानने दुनियापर फिर आक्रमण किया।

रातका समय था। आदमी शान्तिकी निद्रामें स्वर्गके स्वप्न देख रहा था। शैतान अपने विकराल पंजोंको धीरे-धीरे जमीन पर रखता हुआ आदमीके पास आया और अपनी जादूकी तलवारसे उसके दो टुकड़े करके भाग गया। परन्तु आदमीको अर्द्ध-रात्रिके इस आसुरी कृत्यका ज्ञान न हुआ।

प्रातःकाल जब संग्राम हुआ, तो दो हाथोंवाले, दो-पाँवों-वाले, एक सिरवाले और दिलवाले, दोनों आदमियोंने देह और आत्माकी सम्पूर्ण शक्तियोंसे शैतानका मुकाबिला किया, परन्तु उनमें साहस और उत्साह न था।

शैतान जीत गया।

उसने विजय और आनन्दका नक्कारा बजाया, और इसके साथ ही शान्ति और सन्तोष की संस्थायें टूटीं, दुःख और दुःख दारिद्रकी भयानक बीमारियोंने प्रवेश किया।

(३)

अब आदमी पहला आदम, महान्, सर्वशक्तिमान् आदमी न था। उसके शरीरके टुकड़े टुकड़े हो गये थे और जीवनका सामञ्जस्य नष्ट हो उसकी शक्तियोंका संगठन टूट गया था।

८—कल्पना-शक्ति

(ले०—पण्डित बालकृष्ण भट्ट)

लेखक-परिचय—भट्टजीका जन्म मीर्धगंज प्रयागमें सं० १९०१ में हुआ था। "हिन्दी-प्रदीप" आपका प्रसिद्ध मासिक पत्र था। आप एक सिद्धहस्त लेखक थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आपके लेखोंको बहुत पसन्द करते थे। आपके कुछ निबन्धोंका संग्रह "साहित्य-सुमन" के नामसे प्रकाशित है। आपकी शैलीमें कुछ विशेषता है।

मनुष्यकी अनेक मानसिक शक्तियोंमें कल्पना-शक्ति भी एक अद्भुत शक्ति है। यद्यपि अभ्याससे यह शतगुण अधिक हो सकती है पर इसका सूक्ष्म अंकुर किसी-किसीके अन्तःकरणमें आरम्भसे ही रहता है, जिसे प्रतिभाके नामसे पुकारते हैं और जिसका कवियोंके लेखमें पूर्ण उद्गार देखा जाता है। कालिदास, श्रीहर्ष, शेक्सपियर, मिल्टन प्रभृति कवियोंकी कल्पना-शक्ति पर चित्त चकित और मुग्ध हो, अनेक तर्क वितर्ककी भूल-भुलैयामें चक्कर मारता टकराता, अन्तको इसी सिद्धान्त पर आकर ठहरता है कि यह कोई प्राक्तन संस्कारका परिणाम है या ईश्वर-प्रदत्त शक्ति (Genius) है। कवियोंका अपनी कल्पना शक्तिके द्वारा ब्रह्माके साथ होड़ करना कुछ अनुचित नहीं है; क्योंकि जगत्-स्रष्टा तो एक ही बार जो कुछ बन पड़ा सृष्टि निर्माण कौशल दिखाकर आकल्पान्त फरागत होगये, पर कविजन नित्य नयी-नयी रचनाके गढ़न्तसे न जाने कितनी सृष्टि-निर्माण-चातुरी दिखलाते रहते हैं।

इसकल्में बिन्दु और रेखाकी कल्पना करते-करते हमारे सुकुमार मति इन दिनोंके छात्रोंका दिमाग़ही चाट गये। कहां तक गिनावें सम्पूर्ण भारतका भारत इसी कल्पनाके पीछे गारत हो गया, जहां कल्पना (Theory) के अतिरिक्त (Practical) करके दिखाने योग्य कुछ रहा ही नहीं। यूरपके अनेक वैज्ञानिकोंकी कल्पनाको शुष्क कल्पनासे कर्तव्यता (Practice) में परिणत होते देख यहां वालोंको हाथ मल मल पछताना और कलपना पड़ा।

प्रिय पाठक! कल्पना बुरी बला है। चौकस रहो, इसके फेरमें कभी न पड़ना नहीं तो पछताओगे। आज हमने भी इस कल्पनाकी कल्पनामें पड़ बहुत सी भारी-भारी जल्पना कर आपका थोड़ासा समय नष्ट किया, क्षमा करियेगा।

प्रश्न

(१) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—
सूत्र, [illegible], [illegible], [illegible], मूर्तिनिर्माणकौशल [illegible], [illegible], [illegible], कल्पना।

(२) इनको प्रयोग करो :—
[illegible], [illegible], हाथ मलमल पछताना, [illegible]।

(३) नीचे लिखे शब्दोंके अर्थ बताओ :—
कल्पना, जल्पना, [illegible], [illegible]।

(४) कल्पनाकी और मूर्तिनिर्माण [illegible] अन्तर बताओ।

हिन्दी हिन्दुस्तानकी भाषा बिसद बिसाल।
जनम लेत सबसों कहै "माँ माँ! दादा!" बाल ॥ ४ ॥
घरकी औघट घाटकी, खेत प्रेत समसान।
हाट-बाट दरबारकी भाषा ये ही जान ॥ ५ ॥
पितुकुल शोध सकें सहज कठिन मातु कुल जान।
ताहि के उद्धारहित यत्न रचौ सुजान ॥ ६ ॥
जासे जो कुछ बन सके माता पद अरविन्द।
भक्ति-भावसे पूजवे, रहहु सदा आनन्द ॥ ७ ॥

प्रश्न

(१) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—
कविकुलनिनिकाय, अनूप, हिन्द, गिरवर, शोध, अरविन्द।
(२) हिन्दीके उद्धारसे क्या समझते हो?
(३) तीसरे और छठे पदका अर्थ बताओ।
(४) दूसरे पदको स्पष्ट कर समझाओ।
(५) शुद्ध रूप बताओ :—
हिन्द, दिसाल, समसान, पितु, मातु।

—*—

(७) वेदपाठ और शास्त्र-आलोचनाकी कभी अवहेला न करो।

(१) देव-कार्य और पितृ-कार्यका कभी अनादर न करो। (२) माताको देवता रूप समझो। (३) पिताको देवता रूप समझो। (४) आचार्यको देवता स्वरूप समझो। (५) अतिथिको देवता समझो। (६) जिस कार्यमें किसी प्रकार निन्दा होनेकी सम्भावना नहीं, वही करो। (७) अन्य कार्य अर्थात् जिसमें निन्दा होनेकी सम्भावाना है, उसको कभी मत करो। (८) हमलोग जो सुकार्य करें उन्हींका तुम अनुसरण करो। (९) यदि हमलोग कभी बुरा काम करें, उसका अनुकरण तुम कभी न करो।

हमारी अपेक्षा जो श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं, उनके साथ बैठनेकी क्षमता प्राप्त कर ही दमलो—अर्थात् जब तक उनके साथ एक आसन पर बैठने न पाओ, तब तक इसके लिए प्रयत्न न छोड़ो। सदा दान किया करो। श्रद्धा पूर्वक दान करो। अश्रद्धा पूर्वक दान मत करो। धन होनेपर दान करो। लज्जामें पड़ने पर भी दान करो। भयमें भी दान करो। ज्ञानमें भी दान करो। दस मनुष्य मिलकर भी दान करो। यदि किसी काममें तुम्हें सन्देह हो—यह काम करना उचित है कि नहीं, यह आचरण उचित है कि नहीं, ऐसा संदेह होनेपर वहांके रहनेवाले दक्ष, मेधा, विचक्षण, सहृदय और धर्मपरायण ब्राह्मण जैसा करते हों—तुम भी उसी तरह करो। किसी प्रकार मिथ्या

११—वन-शोभा

(ले०—पण्डित श्रीधर पाठक)

(१)

चारु हिमाचल आंचलमें एक साल विसालनको वन है।
मृदु मर्मर शील झरै जल स्रोत है, पर्वत ओट है, निर्जन है॥
लिपटे हैं लता-द्रुम, गानमें लीन प्रवीन विहंगनको गन है।
मटक्यों तहँ गवनें भूल्यो फिरै, मदमायको सो अलिको मन है॥

(२)

भारतमें वन पावन तू ही, तपस्वियोंका तप-आश्रम था।
जग-तत्त्वकी खोजमें लग्न जहाँ ऋषियोंने अभग्न किया श्रम था॥
जब प्राकृत विश्वका विभ्रम और था, सात्विक जीवनका क्रम था।
महिमा वनवासकी थी तब और प्रभाव पवित्र अनूपम था॥

प्रश्न

(१) वनकी किस-किस सुन्दरताका वर्णन कविने किया है ?

(२) पहले छन्दमें प्रयुक्त आँचल, विसालन, लताद्रुम, प्रवीन और गवनें—इन शब्दोंका पद-परिचय बताओ।

(३) पहले पदका अर्थ लिखो।

—:०:—

माननीय श्रीनिवास शास्त्री

शास्त्रीजीका जन्म सन् १८६९ की २२ वीं सितम्बरको मद्रास-प्रान्तके 'वलंगिमन' नामक गाँवमें हुआ था। उनके माता-पिता निर्धन थे। शास्त्रीजीके ही कथनानुसार निर्धनताके कारण मात-पिताको कभी कभी पेटपर पट्टी बाँधकर रह-जाना पड़ता था। किन्तु वे शिक्षाका मूल्य समझते थे। इसलिए स्वयं तो कष्ट उठाते थे; किन्तु अपने होनहार पुत्रकी शिक्षाकी कभी उपेक्षा नहीं करते थे। बचपनसे ही शास्त्रीजीकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी और अंगरेजी भाषाके अभ्यास की ओर उनकी विशेष अभिरुचि थी। १४ सालकी अवस्थामें शास्त्रीजीने मैट्रिक पास किया। इसके बाद वे कुम्भकोनम्‌के सरकारी कालेजमें प्रविष्ट हुए। सन् १८८५ में शास्त्रीजी एफ० ए० में और १८८७ में बी० ए० में ऐसी प्रतिष्ठाके साथ उत्तीर्ण हुए कि प्रान्त-भरमें ये सर्व प्रथम रहे—अंगरेजीमें ये प्रथम श्रेणीके विद्यार्थी माने गये और इसके उपलक्ष्यमें उनको धन तथा स्वर्ण-पदकसे पुरस्कृत किया गया।

तत्पश्चात् शास्त्रीजीने कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश किया। शिक्षा-दानका कार्य ही आपको अधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। पहले आप मायावरम्‌के म्यूनिसिपल हाई स्कूलमें अध्यापक हुए, फिर सलेमके म्यूनिसिपल कालेजमें शिक्षक, इसके बाद मद्रासके पचैयप्पा हाई स्कूलमें मास्टर और अन्तमें ट्रिप्लिकेनके हिन्दू हाई स्कूलके हेड मास्टर हुए। इसी अवसर पर शास्त्रीजी-को भारतके महान् वक्ता, नेता और राजनीतिज्ञ स्वर्गीय

आपकी यह गवाही बड़े मार्केकी समझी गयी थी और विपक्षियोंने भी इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की थी। सन् १९२० में शास्त्रीजी कौंसिल आफ स्टेटके सदस्य चुने गये।

सन् १९२१ में वह चिरस्मरणीय अवसर आया, जब शास्त्रीजी इंगलैण्ड जाकर साम्राज्य-परिषद्में सम्मिलित होनेके लिए भारतवर्षकी ओरसे प्रतिनिधि चुने गये। वहाँ दक्षिण अफ्रिकाके तत्कालीन प्रधान-मन्त्री जेनरल स्मटस्से पहले पहल आपकी भेंट हुई थी। इस परिषद्में पधारे हुए साम्राज्यके भिन्न-भिन्न भागोंके प्रतिनिधि शास्त्रीजीकी बहुज्ञता, विद्वत्ता और नीतिज्ञता देखकर दंग हो गये थे। सम्राट्ने शास्त्रीजीको प्रीवी कौंसिलका सदस्य चुनकर सम्मानित किया और इसी अवसर पर "लन्दन नगरीकी स्वाधीनता' (The Freedom of the city of London) की उपाधिसे आपको विभूषित किया गया था। इसके बाद ही आप राष्ट्रसंघके द्वितीय अधिवेशनमें भारतके प्रतिनिधि होकर जेनेवा पहुंचे। राष्ट्रसंघकी बैठकमें आपने जो विद्वत्ता पूर्ण भाषण दिया था, वह संसारके इतिहासमें एक महत्वकी वस्तु है।

इसके बाद भारत-सरकारने वाशिंगटन-परिषद्में सम्मिलित होनेके लिए आपको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। अमेरिकामें भी आपके भाषणोंका ऐसा प्रभाव पड़ा कि भारतके विषयमें श्रोताओंके हृदयमें उच्च भाव उदय हुए बिना नहीं रहा।

प्रश्न

(१) गान्धीजीका जीवन-चरित संक्षेप में लिखो

(२) इस पाठके द्वितीय परिच्छेद में चार अव्यय ढूँढ़ो ।

(३) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—

व्यक्त, मन्त्र-मुग्ध, मौलिकता, अभिरुचि उपयुक्त, अनवरत, प्रतिनिधि ।

(४) 'भारत-सेवक-समिति' के संस्थापकका नाम बताओ । समितिके सदस्य को किस बातकी प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ?

(५) नीचे लिखे मुहावरोंका अपने वाक्यमें प्रयोग करो :—

आड़े हाथ लेना, फटकार बताना, जोड़ी नहीं रखना ।

जिस झोंकेपर झोंके लेती, फूल-फूलकर झूल रही थी।
उसने भी है तुझे भुलाया, सारा प्रेम कुरंग हुआ है॥ ५॥
अब क्या जुड़ सकती है तरुमें, किसकी है तू कौन है तेरा?
इस दुनियामें कोई किसीके दुखमें कभी न संग हुआ है॥ ६॥
"दुख क्या है!" "अभिमान प्रतिध्वनि," है आशाका रूप निराशा।
है जीवनका हेतु मरण ज्यों मणिका हेतु भुजंग हुआ है॥ ७।

पड़ी भूमिपर ०

प्रश्न

(१) सूखी पत्तीकी पहले कैसी दशा थी? उसमें क्या परिवर्तन हुआ?

(२) तुम्हारी समझसे क्या सूखी पत्तीकी इस दशाका यही कारण है जो इस कवितामें बतलाया गया है? यदि नहीं तो क्या कारण है?

(३) इस कवितासे क्या शिक्षा ग्रहण की जा सकती है?

(४) अन्तिम तीन पंक्तियोंका अर्थ लिखो।

(५) नीचे लिखे शब्दोंका प्रयोग वाक्य में करो :—
कुसुम, कुरंग, प्रतिध्वनि और भुजंग।

(६) "है जीवनका हेतु......भुजंग हुआ है" इस वाक्यका भाव पूर्णतया स्पष्ट करो।

———

विधवा (गाती है)

हे नाथ निज रूप हमको दिखाओ।
तुम पास आओ या हमको बुलाओ ॥
ब्रजचन्द छिपिये न घन श्याममें अब।
ज्योत्स्ना दिखाओ, सुधाको बहाओ ॥
पुष्पोंको अपनी हँसी दान देकर।
कुछ तुम हँसो, कुछ हमें भी हँसाओ ॥
चरणोंके शूलोंको मृदु फूल कीजे।
करके सुमनको सुफल प्रभु बनाओ ॥

बालक—माँ, पढ़ने कब बिठाओगी ?

माँ (बालककी ओर देखकर) हाँ, बेटा अब तुम्हारे पढ़नेके दिन आ गये। जयदेव आचार्यकी पाठशालामें तुम्हें दो ही चार दिनमें पढ़ने बिठा दूँगी। जयदेवजी तुम्हारे पिताके सहपाठी और परम मित्र हैं। तुम्हारे पिता कहा करते थे कि जयदेवजीकी बुद्धि बड़ी तीव्र है। वे तुम्हें पुत्रकी तरह प्यार करेंगे।

बालक— माँ, क्या पिताजीकी कुछ बातें तुम्हें याद हैं ? मुझे तो कुछ भी याद नहीं है।

माँ—(आँसू पोंछती हुई) बेटा, तुम्हारे पिताकी बातें मुझे खूब याद हैं। तुम्हें कैसे याद होतीं! तुम तो केवल ढाई वर्षके थे, जब तुम्हारे पिताका स्वर्गवास हुआ। उनके वे अन्तिम शब्द मुझे न भूलेंगे। उन्हीं शब्दोंके सहारे गत

(उठकर कृष्ण-मूर्तिके सामने जाती है, प्रणाम करती है।)
भगवन्, इस अनाथकी आँखोंके तारेकी रक्षा करो, उसे अपनी भक्तिका अनमोल रत्न दो।

[गोपाल माँ, माँ पुकारता आता है। साथमें चमेली भी है। माँको प्रणाम करते देख दोनों कृष्णमूर्तिको साष्टांग प्रणाम करते हैं।]

(पटाक्षेप)

दूसरा दृश्य

[माँ खड़ी है, गोपाल पुस्तकें लिये अलग खड़ा है। चमेली बैठी पत्ता तोड़ रही है।]

माँ—उस दिन तो तू पाठशालाकी बड़ी प्रशंसा करता था; कहता था, कई कहानियाँ सुनीं, एक श्लोक याद किया, बड़ा आनन्द रहा; फिर आज जानेमें क्यों आनाकानी कर रहा है?

गोपाल—(कुछ नहीं बोलता; मुँह फेर लेता है।)

चमेली—मैं बताऊँ, काकी?

गोपाल—चुप-चुप (माँकी साड़ीमें मुँह छिपा लेता है।)

चमेली—काकी, गोपालको पाठशाला तो अच्छी लगती है; पर कल लौटते समय डरा था। इसीसे आज जानेमें संकोच कर रहा है।

माँ—क्यों रे गोपाल, यही बात है? बतादे।

गोपाल—हाँ

माँ—क्यों, डर काहेका?

गोपाल—रास्तेमें जंगल पड़ता है। वहाँ लौटते समय बड़ा

जयदेव -कहाँ ढूं ढूं ? किस प्रकार मनको शुद्ध करूं ? भगवान्‌ने कहा था "विद्या है, पर प्रेम नहीं है।" किस उपायसे हृदयमें प्रेम उपजेगा ? गाओ चैतन्य, और गाओ।

चैतन्य-- (गाता है)

स्नेहमयी जननीके घरमें, विरह-विधुर राधा अन्तरमें,
कृष्णाके अनन्त अम्बरमें, या काली कुब्जाके घरमें,
या इस वसुधाके उस पार कहाँ मिलेगा प्राणाधार !

जयदेव- छोड़ दूंगा, वसुधाको छोड़ दूंगा, इस बुढ़ापेमें और क्या सधेगा ? भगवान्, मुझे बुलालो।

चैतन्य (फिर गाता है)

वन कदम्ब, कालिन्दी तटमें, गिरि-गह्वर वसुधाके पटमें,
व्रज वीथी, वन, वंशीवटमें, जन, जनपद, पथमें, पनघटमें,
खोजा; खोज हुआ लाचार; नहीं मिला वह प्राणाधार।

जयदेव- चलो, चलो, उसी भक्तवर बालक गोपालके पास जाऊंगा, उसीके सत्संगसे भगवान्‌का ध्यान करूंगा। वह आ-रहा है, वह आ रहा है, (पुकारते हैं) गोपाल ! गोपाल !!

गोपाल (आता है) आप हैं गुरुदेव, आप कहाँ फिर रहे हैं ! हम सब विद्यार्थी आपके बिना व्याकुल हैं। (चैतन्य-की ओर देखकर) भैया, प्रणाम।

गुरुदेव -प्यारे गोपाल, गुरु तू है और शिष्य मैं हूं; क्या तो प्यारे कृष्णसे मुझे किससे मिलाया ?

गोपाल- गुरुदेव मैं तुच्छ क्या जानता, मेरे जानते तो मुझे

कृष्ण प्रेम सिखाया है। चलिये, उन्हींसे पूछेंगे। चैतन्य मैया, आप भी आइये।

[पटाक्षेप]

छठा दृश्य

[गोपालका घर; कृष्ण मूर्तिके सामने जयदेव, चैतन्य और बमेली साथ गोपालकी माता आती है।]

माता—आचार्य, मैं बेचारी क्या जानूँ ? इसी मूर्तिके सहारे मैंने भगवान्‌का प्रेम पाया और यही इस बालकको सिखाया। आइये हम सब प्रार्थना करें।

(सब गाते हैं)

हे नाथ निज रूप हमको दिखाओ। (इत्यादि)

[पटाक्षेप]

प्रश्न

(१) गोपालने किस प्रकार भगवान्‌को अपने वशमें किया ?

(२) पाठशाला जाते समय मार्गमें गोपालको कौन रक्षा करता था ?

(३) जयदेवकी पुकार सुनकर भगवान् क्यों प्रकट न हुए ?

(४) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—

मर्मस्पर्श, शूल, भंडारगार, भवन, अनिल, विरह-विधुर [illegible]।

(५) घुमड़-घुमड़, [illegible]-अम्बर, व्रज-वीथीमें समास-विग्रह बताओ।

— — —

१५—रहीमके दोहे

(ले०—अब्दुर्रहीम खानखाना 'रहीम')

लेखक-परिचय—जन्म सन् १५५३—मृत्यु सन् १६२५। ये प्रसिद्ध मुगल सरदार बैरमखां खानखानाके पुत्र थे। अरबी, फारसी, तुरकी और संस्कृतके अच्छे विद्वान् और हिन्दी काव्यके पूरे मर्मज्ञ थे। तुलसीदासजी और इनके बीच बड़ा स्नेह था। मनुष्य-जीवनकी नाना दशाओंपर रहीमने बड़े मार्मिक दोहे कहे हैं। जो घर-घर प्रचलित हैं। तुलसीके समान रहीमने भी व्रजभाषा और अवधी दोनोंमें रचनाएँ की हैं। इनकी मुख्य रचनाएँ ये हैं—"दोहावली" "बरवैनायिका-भेद," "शृङ्गार-सोरठ।"

तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कवि रहीम पर काज हित, सम्पति संचहिं सुजान॥ १॥
कह रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥ २॥
तबही लगि जीबो भलो, दीबो परे न धीम।
बिन दीबो जीबो जगत, हमहिं न रुचे रहीम॥ ३॥
अमर बेलि बिन मूलकी, प्रति पालन है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिये काहि॥ ४॥
दीरघ दोहा अर्थके, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुण्डली, सिमिटि कूदि चढ़िजाहिं॥ ५॥
बड़े दीनको दुख सुने, लेत दया उर आनि।
हरि हाथी सों कब हुती, कहु रहीम पहिचानि॥ ६॥

रहिमन राम न उर धरै, रहत विषय लपटाय।
पसु खर खात सवाद सों, गुर गुलियाये खाय ॥ ७ ॥
कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंगनाम भो धीम।
केहिकी प्रभुता नहीं घटी, पर घर गये रहीम ॥ ८ ॥
जो पुरुषारथ ते कहूँ, सम्पति मिलति रहीम।
पेट लागि वैराट घर तपत रसोई भीम ? ॥ ६ ॥
ज्यों रहीम गति दीपकी, कुल कपूत गति सोइ।
बारे उजियारे लगै, बढ़े अँधेरो होइ ॥ १० ॥
छोटन सों सोहैं बड़े, कह रहीम यह लेख।
सहसनको हय बाँधियत, लै दमरीकी मेख ॥ ११ ॥
माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैग बसुधा करी, तऊ बावनै नाम ॥ १२ ॥
रहिमन अब वे बिरिछ कहँ, जिनकी छाँह गँभीर।
बागन बिच बिच देखियत, सेंहुड़, कंज करीर ॥ १३ ॥
रहिमन मनहि लगाइकै, देखिलेहु किन कोइ।
नरको बस करियो कहा, नारायन बस होइ ॥ १४ ॥
रहिमन लाख भली करै, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत, पय पियत हूँ, साँप सहज धरि खाय ॥ १५ ॥
मथत मथन माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय ॥ १६ ॥
गगन चढ़ै फिर क्यों गिरै, रहिमन बहरी बाज।
फेरि आय बन्धन परै, पेट अधमके काज ॥ १७ ॥

कह रहीम मुसकिल परी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे सों तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम॥ १८॥
रहिमन कोऊ का करै, ज्वारी चोर लबार।
जो पति राखन हार है, माखन चाखन हार॥ १९॥
यों रहिम सुख होत है, उपकारीके संग।
बाटन वारेके लगै, ज्यौं मेंहदीको रंग॥ २०॥

प्रश्न

(१) कुछ शब्दोंके अर्थ बताओ —

ज्वारी, ढिठाई, नीच, सुधि, मुसकिल।

(२) [illegible]

(३) [illegible]

—*—

पनडुब्बी जहाज़ (पानीके ऊपर)
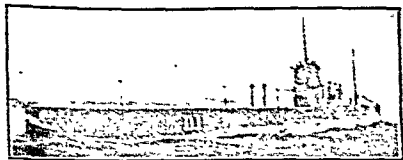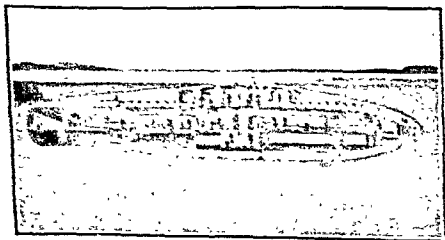
पनडुब्बी जहाज़ पानीके भीतर

हॉलैंड अमेरिका पहुंचा—उत्साह और हौसले लेकर। किन्तु यहाँ भी निराशा और विफलताका राज्य पाया। यद्यपि कई पत्र-सम्पादक उससे मिलने आये। उसने अपना नक्शा उन्हें दिखलाया, किन्तु उनके दड़े दिमागमें उसकी काल्पनिक बातें न घुस सकीं।

हॉलैंडके पास रुपये थे नहीं गरीबका लड़का था। अमेरिकामें भी मास्टरी करना शुरू किया। कुछ रुपये जमा कर लेनेपर उसको फिर वही धुन सवार हुई। अपने हाथसे काठका एक छोटा-सा पनडुब्बी जहाज़ बनाना शुरू किया। उसका रूप-रंग सिगरेटके जैसा था; भीतर एक पेट्रोल-इंजिन लगा था। उसे उठाकर एक तालावमें लाया। अफसोस, काठका बना होनेके कारण उसके भीतर पानी पहुंचने लगा, पेट्रोल-इंजिन भी ठीकसे काम न देसका! पनडुब्बी जहाज़का यह नमूना बेकार साबित हुआ।

किन्तु उसको अपनी कल्पना पर विश्वास था। उस काठके नमूने बनानेके बाद उसके मनमें यह बात जम गयी कि अगर धातुसे बनाया जाय और अच्छा पेट्रोल-इंजिन लगाया जाय तो, पनडुब्बी जहाज़ ज़रूर तैयार हो सकता है।

उसे एक सुयोग मिलगया। आयरलैंडके बहुत-से लोग उस समय अमेरिकामें रहते थे। वे लोग अंगरेजी सरकारके विद्रोही थे और किसी प्रकार उसे नेस्तनाबूद करने पर तुले थे। हॉलैंड उनसे मिला, अपना नक्शा उन्हें दिखलाया

१७—मन

(ले॰ एक "भावुक आत्मा")

(१)

कौड़ी-सा कौड़ियोंमें कलकला रहा तू कभी,
फूला औ फला भी तू खिला भी खिला फूल-सा।
मूल्यवान होकर आँका तू मन माणिक-सा,
मूल्यहीन होकर हुआ तू कभी धूल-सा॥
भूल-सा रहा हूँ, मूढ़ मूल-सा बना तू कभी,
शूल-सा बना या अनुकूल प्रतिकूल-सा।
भारी औ हुआ तो हुआ भारी तू अचलोंसे मन,
हलका हुआ तो हुआ हाय कभी तूल-सा॥

(२)

माना मान माया हो भवानीसे न तेरे औ कि,
ऊँच-नीच राव-रंक ऐसा कौन जन है ?
पानी सम तेरे लिए औ न हो बहाया गया,
पाया गया वसुधामें ऐसा कौन धन है ?
तेरे परिपीड़नसे त्राण चाहता है प्राण,
त्राहि-त्राहि पाहि-पाहि रट रहा तन है।
कैसे हो दमन मेरा गगन पवन सा है,
कोमल सुमन-सा पहाड़ी कड़ा मन है॥

प्रश्न

(१) पहले पदका भावार्थ बताओ।

(२) दूसरे पदके अन्तिम दो पंक्तियोंके भाव समझाओ।

(३) नीचे लिखे शब्दोंका अर्थ बताओ :—

तुल-तूल, सूल, तूल, प्रान, आहि, पाहि।

(४) नीचे लिखे शब्दोंका प्रयोग अपने बनाये वाक्योंमें करो :—

मूल्यहीन, दमन, गमन, शमन।

१८—फा-हियानकी भारत-यात्रा

(ले०—पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी)

लेखक-परिचय— द्विवेदीजीका जन्म संवत् १९२१ में राय बरेलीके दौलतपुर गाँवमें हुआ। पढ़ना समाप्त करनेपर आपने रेलवे-विभागमें नौकरी की। रेलवेकी नौकरी के साथ-साथ आपकी साहित्य-सेवा भी जारी थी। प्रसिद्ध पत्रिका "सरस्वती" का अनेक वर्षों तक सम्पादन कर आपने हिन्दीका बड़ा उपकार किया है। आपका कई भाषाओंपर अधिकार है। हिन्दीमें तो आपने नवयुग उपस्थित कर दिया है। इधर पचीस-तीस वर्षों के भीतर खड़ी बोलीको जैसा प्रोत्साहन आपसे मिला है, वैसा प्रोत्साहन किसी अन्यसे नहीं। आप जैसे महारथीसे हिन्दी-साहित्य धन्य है।

प्राचीन भारतके इतिहासका थोड़ा-बहुत पता जो हमें लगता है, वह ग्रीक और चीनी यात्रियोंके यात्रा-वृतान्तसे लगता है। ग्रीसवाले इस देशमें सैनिक, शासक अथवा राज-दूत

बनकर आते थे। इसीसे उनके लेखोंमें अधिकतर राजनीति, शासन-पद्धति और भौगोलिक बातोंकाही है, उन्होंने भारतीय धर्म और शास्त्रोंकी छानबीन विशेष परवाह नहीं की। चिनी यात्रियोंका कुछ और ही उद्देश्य था। वे विद्वान् थे। उन्होंने हज़ारों मीलकी यात्रा की थी कि वे बौद्धोंके पवित्र स्थानोंका दर्शन करें, बौद्ध धर्मकी पुस्तकें एकत्र करें और उस भाषाको पढ़ें जिसमें वे पुस्तकें लिखी गयी थीं। इन यात्राओंमें उनको नाना प्रकारके क्लेश सहने पड़े। कभी वे लूटेगये, कभी वे रास्ता भूलकर भयंकर स्थानमें भटकते फिरे और कभी उन्हें जंगली जन्तुओंका सामना करना पड़ा। परन्तु इतना सब होनेपर भी वे केवल विद्या और धर्म-प्रेमके कारण भारतवर्षमें घूमते रहे। चीनी यात्रियोंमें तीनके नाम बहुत प्रसिद्ध हैं--फा-हियान, संगयान और ह्वेनसांग। इन तीनोंने अपनी अपनी यात्राका वृत्तान्त लिखा है। उससे भारतीय सभ्यताका बहुत-कुछ पता चलता है। प्रसिद्ध चीनी यात्रियोंमें फा-हियान सबसे पहले भारतमें आया। उसीकी यात्राका संक्षिप्त हाल नीचे लिखा जाता है।

फा-हियान मध्य चीनका निवासी था। ४०० ईसवीमें वह अपने देशसे भारत-यात्राके लिए निकला। इस यात्रासे उसका मतलब बौद्ध तीर्थोंके दर्शन और बौद्ध धर्मकी पुस्तकोंका संग्रह करना था।

चीनसे खुतन होता हुआ फा-हियान काबुल आया। वहाँ-से वह स्वात, गन्धार और तक्षशिला होता हुआ पेशावर पहुँचा। पेशावरमें उसने एक बड़ा ऊँचा, सुन्दर और मजबूत बौद्ध स्तूप देखा, सिन्धुनदी पारकर वह मथुरा आया।

मथुरासे फा-हियान कन्नौज आया। यह नगर उस समय गुप्त राजाओंकी राजधानी था। उसने कन्नौजके विषयमें इसके सिवा कुछ नहीं लिखा कि वहाँ दो संघाराम थे। कोसल राज्यकी प्राचीन राजधानी श्रावस्ती उजाड़ पड़ी थी, उसमें केवल दो सौ कुटुम्ब निवास करते थे। जेतवन, जहाँ भगवान् बुद्धने धर्मोपदेश किया था, अच्छी दशामें था। वहाँ एक सुन्दर विहार था। विहारके पास एक तालाब था, जिसका जल बड़ा निर्मल था। कई बाग भी थे, जिनसे विहारकी शोभा बढ़ गयी थी। विहारमें रहनेवाले साधुओंने फा-हियान-का हर्षपूर्वक स्वागत किया।

भगवान् बुद्धके जन्मस्थान कपिलवस्तुकी दशा फा-हिया-नके समयमें बुरी थी। वहाँ न कोई राजा था न प्रजा। नगर प्रायः उजाड़ था। थोड़े-से साधु और दस-बीस अन्य जन वहाँ थे। कुशी नगर भी, जहाँ भगवान् बुद्धकी मृत्यु हुई थी, बुरी दशामें था। उस वैशाली नगरको, जहाँ बौद्ध धर्मकी पुस्तकोंका संग्रह करनेके लिए बौद्धोंका दूसरा सम्मेलन हुआ था, फा-हियानने अच्छी दशामें पाया। प्रसिद्ध पाटली-पुत्रके विषयमें फा-हियानका कथन है कि अशोकके स्तूपके समीप ही

वह यहाँ मरे, चाहे बचे। इस जहाज़के यात्रियोंमें एक व्यापारी बड़ा सज्जन था, वह फा-हियानसे प्रेम करने लगा था। मल्लाहोंकी इस सलाहका उसने घोर प्रतिवाद किया। उसीके कारण बेचारे फा-हियान किसी निर्जन टापूमें छोड़ देनेसे बच गया। ८२ दिनकी यात्राके बाद दक्षिणी चीनके समुद्र-तटपर वह सकुशल उतर गया और अपनी जन्म भूमिके दर्शनोंसे उसने अपनेको कृतकृत्य माना।

प्रश्न

(१) फा-हियानने भारतकी यात्रा कब और किस उद्देश्यसे की थी?

(२) उसने कपिलवस्तु, राजगृह और पाटली-पुत्रके सम्बन्धमें क्या लिखा है?

(३) फा-हियान किस मार्गसे इस देशमें आया और किस मार्गसे वापिस गया?

(४) प्रतिवाद, कृतकृत्य, बोधि-वृक्ष, और संघारामका प्रयोग अलग बताते हुए, वाक्योंमें करो।

(५) बौद्ध-धर्मसे क्या अभिप्राय है? इसे किसने चलाया था? इसके विषयमें तुम जो कुछ जानते हो, लिखो।

---

(३)

आज बेढंग बनगये हैं वे।

ढंग जिनमें भरे हुए कुल थे॥

बाँध सकते नहीं कमर भी वे।

बाँधते जो समुद्रपर पुल थे।

(४)

जो रहे आसमानपर उड़ते।

आज उनके कतर गये हैं पर॥

सिर उठाना उन्हें पहाड़ हुआ।

जो उठाते पहाड़ उँगुली पर॥

(५)

हैं रहे डूब वे गड़हियों में।

वे तरह बार-बार खा धोखा॥

सूखता था समुद्र देख जिन्हें।

था जिन्होंने समुद्रको सोखा॥

(६)

जो सदा मारते रहे पाला।

वे पड़े टाल-टूलके पाले॥

आज हैं गाल मारते बैठे।

जंगलोंके खंगालने वाले॥

(७)

तप सहारे न क्या सके कर जो।
मन उन्होंका मरा बहुत हारा॥
है लहू घूँट आज वे पीते।
पी गये थे समुद्र जो सारा।

(८)

सब तरह आज हार वे बैठे।
जो कभी थे न हारने वाले।
आप अब उबर नहीं पाते।
स्वर्गके भी उबारने वाले।

(९)

पेड़को जो उखाड़ लेते थे।
है न सकते उखाड़ वे मोथे।
वे नहीं कूद फाँद कर पाते।
फाँद जाते समुद्रको जो थे॥

(१०)

जो जगत-जाल तोड़ देते थे।
तोड़ सकते यहाँ नहीं जाला।
वे मही मथ यहाँ नहीं पाते।
था जिन्होंने समुद्र मथ डाला॥

प्रश्न

(१) "बाँधते जो समुद्रपर पुल थे," "जो उठाते पहाड़ अँगुली पर" "पी गये थे समुद्र जो सारा" "फोड़ आते समुद्र को जो थे" इन पंक्तियोंमें किस-किसकी ओर संकेत है ?

(२) दूसरे, छठे, और सातवें पद्यका अर्थ बताओ।

(३) नीचे लिखे शब्दोंके अर्थ बताओ :—
धाक, रतन, पाला,

(४) नीचे लिखे मुहावरोंका अपने वाक्यमें प्रयोग करो :—
धूलमें मिलना, धूल बरसना, पर कतर जाना, पहाड़ टोना, पाले पड़ना, लहूका घूँट पीना।

२०—बेतारका चमत्कार

(ले०— श्यामनारायण कपूर बी० एस सी)

आजकल चारों ओर विज्ञानकी तूती बोल रही है। विज्ञानके चमत्कार और आश्चर्य-जनक कार्य देखकर दाँतोंतले उँगली दबानी पड़ती है। विज्ञानकी सहायता से नित्य प्रति एक-न एक नया तोहफ़ा पेश कर दिया जाता है, किन्तु भारतमें यह सब चमत्कारपूर्ण कार्य बहुत देरमें देखनेमें आते हैं। पाश्चात्य देशोंमें यह सब बातें विशेष आश्चर्यजनक नहीं समझी जातीं। अकेले रेडियोकी ही सहायतासे अनेकानेक महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो रहे हैं।

सर्वसाधारणको अक्सर परेशान किया करता है। पर इसकी कार्य-पद्धति अब समझना कुछ अधिक कठिन नहीं है। जब कोई व्यक्ति गाता या बोलता है, तब उसके स्वरसे आस पासकी हवामें कम्पन पैदा हो जाता है। ब्राडकास्टिंग स्टेशन पर यही कम्पन सूक्ष्म शब्द-ग्राही यन्त्र अथवा माइक्रोफ़ोन में ग्रहण कर लिये जाते हैं और माइक्रोफ़ोनके डाइफ़्राममें ठीक वैसे ही कम्पन पैदा हो जाते हैं। यह कम्पन वैद्युतिक कम्पन उत्पन्न करते हैं। प्रेषक-यन्त्र इन्हीं वैद्युतिक कम्पनोंको वायुमें भी उत्पन्न कर देता है। वायुके कम्पन प्रकाश जैसी तेज़ रफ्तारसे चारों ओर दौड़ जाते हैं। वायरलेससेट या रेडियोका एरियल इन्हीं कम्पनोंको ग्रहण करलेता है, और ग्राहक यन्त्रके डाइफ़्राममें ठीक प्रेषक-यन्त्र जैसे कम्पन पैदा करता है। ग्राहक यन्त्रका डाइफ़्राम या लाउड स्पीकरका डाइफ़्राम काँपने लगता है। डाइफ़्रामके सामनेकी हवामें कम्पन पैदा हो जाता है और आप ब्राडकास्टिंग स्टेशन द्वारा प्रेषित गायन या संवादको सुनने लगते हैं। यह सब काम पलक मारते हो जाता है।

यह तो साधारण ब्राडकास्टिंगकी बात है। परन्तु अब जो समाचार मिले हैं, वे इससे कहीं अधिक कौतुहलजनक हैं। बेतारकी बदौलत कुछ ऐसे यन्त्र बन गये हैं, जिनकी सहायतासे आप घर बैठे देख सकेंगे कि इस समय लन्दन या अमेरिकामें क्या हो रहा है, अथवा समुद्रकी तह या वायु-मण्डलमें विचरण करनेवाले हवाई जहाजमें कौन-सी घटनाएँ घटित हो रही

नये यन्त्रोंका नाम दूर-दर्शन या टेलिविज़न-यन्त्र रक्खा गया
थोड़ी-थोड़ी दूरकी घटनाएँ देखनेमें तो ये यन्त्र सफलता
ा ही कर चुके हैं और काममें भी लाये जाते हैं। प्रायो-
ि रूपमें दूर-दूरकी घटनाएँ देखी जा चुकी हैं। अब शीघ्र
ह दिन आनेवाला है जब आप अपने कमरेमें बैठे-बैठे एक
दबाकर चीन या जापानका हाल देख सकेंगे, या उधरसे
यत ऊब जानेपर पेरिसकी सैर करेंगे।

प्रश्न

(१) रेडियो द्वारा गाना आदि कैसे सुनाई पड़ते हैं, समझाओ।

(२) यह यन्त्र किस स्थानमें उपयोगमें लाया जा सकता है ?

(३) उस यन्त्र का नाम बताओ जिसके द्वारा हम घर बैठे दूर-दूर की घटनाएँ देख सकते हैं ?

(४) निम्न लिखित मुहावरोंका अपने बनाये वाक्यमें प्रयोग करो :-
तूती बोलती, दाँतों तले उँगली दबाना, पलक मारते।

२१—अन्तिम अभिलाष

(ले०—श्रीशम्भूदयाल सक्सेना साहित्यरत्न)

आता हूँ—पर नाथ, साथ अभिलाष लिये आता हूँ।
श्री चरणोंमें यहीं एक अवशेष विनय लाता हूँ॥
जन्मूँ किसी रूपमें फिर तो यही रम्य भूतल हो।
यही ग्राम्य जीवन हो मेरा, यही केलिका स्थल हो॥१॥
यहीं स्वजन हों, यहीं सखा हों, यहीं मित्र हों प्यारे।
यहीं हितैषी, यहीं बन्धु हों, यहीं कुटुम्बी सारे॥
पशु-पक्षी हों यहीं, यही टूटा-फूटा-सा घर हो।
हरे-भरे हों खेत यहीं गहरा नीला सरवर हो॥२॥
ऐसी ही प्रभात वेला हो, यही सान्ध्यकी लाली।
सुखकर उज्ज्वल दिवस यही हों यही शर्वरी काली॥
तना, वितान-तुल्य यह प्यारा विस्तृत नीलाम्बर हो।
शीतल-मन्द-सुगन्ध-प्रवाहित यही वायु सुन्दर हो॥३॥
इसका पंक-कीच भी होना मेरे मन भाता हो।
उड़ते हुए वायुमें इसके कण-कणसे नाता हो॥
फिर-फिर जन्मूँ मरूँ पुनः पर रहूँ न इससे न्यारा।
राज-वेशसे भी स्वदेशका रंक-रूप हो प्यारा॥४॥

प्रश्न

(१) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ :—
अवशेष, रम्य, ग्राम्य, शर्वरी, वितान, प्रवाहित
(२) यह कविता किस अवसरकी है ?

२३—वामनावतार

(ले०—रायदेवीप्रसाद "पूर्ण")

लेखक-परिचय—रायदेवीप्रसाद "पूर्ण" बी० ए० बी० एल० का मार्गशीर्ष कृष्ण १३, सं० १९२५ में जबलपुरमें हुआ। "पूर्ण" जी वर्तमान हिन्दी-कवियोंमें बहुत ऊँचा स्थान रखते थे। इनकी लिखी हुई कितनी ही पुस्तकें हैं। "चन्द्रकला-भानुकुमार नाटक" और "धाराधर-धावन" बहुत प्रसिद्ध हैं। पहिले ये 'रसिक-वाटिका' नामक कविता पुस्तक हर महीने निकालते थे। पीछेमें 'धर्मकुसुमाकर' नामका एक मासिक पत्र निकालने लगे थे। 'पूर्ण' जी थे तो कायस्थ, पर आचरण और विद्यामें बड़े-बड़े विद्वान ब्राह्मणोंसे भी कम न थे। ये कानपुरमें वकालत करते थे और वहाँके नामी वकीलोंमें इनकी गणना थी। हिन्दी कविताके लिए बड़े ही दुर्भाग्यकी बात है कि वह "पूर्ण" जीके द्वारा पूर्ण न होने पायी। वह विद्वान्, वह नामी वकील और वह धर्मप्राण पुरुष केवल ४५ वर्षकी अवस्थामें ३० जून १९१५ को स्वर्गवासी हो गया।

अदेवनकी उर आनि अनीति,
निवाहनको सुर-पालन-रीति।
सुधारनको जनको अधिकार,
धर्यो हरि वामनको अवतार ॥ १ ॥
बड़े जनको नहिं माँगन जोग,
फबै छल-साधन में लघु लोग।
रमापति विष्णु असङ्ग अनूप,
धर्यो यहि कारन वामन रूप ॥ २ ॥

भये सजि साज, चले मख-भूमि;
पर्यो पग देखि धरातल घूमि।
प्रसून घने बरसे सुर-गोत
दिवाकर-तेज निछावर होत ॥ ३ ॥

जबै पहुँचे बलि-भूपति-द्वार;
गये सब मोह रहे मन वार।
कह्यो कोउ चंद, कह्यो कोउ भान;
कोऊ समझ्यो तप मूरतिमान ॥ ४ ॥

गयो बलि भूपति पै दरवान;
कियो द्विजको इमि रूप बखान;
"सुनौ विनती मम दानव-भूप;
खड़ो दरपै बटु एक अनूप ॥ ५ ॥

विराजत है तनुपै मृग-छाल,
छटा-जुत छाजत छत्र विशाल।
कमंडलु दंड लसै कर माहिं;
महाद्युतिकी उपमा जग नाहिं ॥ ६ ॥

बड़े दृग हैं अरविंद समान;
प्रलंब भुजा गज-सुंड-प्रमान।
बड़ो तपवान बड़ो गुन-गेह;
अहै पर बावन अंगुल देह" ॥ ७ ॥

२३—वामनावतार

(ले० —रायदेवीप्रसाद "पूर्ण")

लेखक-परिचय—रायदेवीप्रसाद "पूर्ण" बी० ए० बी० एल० का मार्गशीर्ष कृष्ण १३, सं० १९२५ में जबलपुरमें हुआ। "पूर्ण" जी वर्तमान हिन्दी-कवियोंमें बहुत ऊँचा स्थान रखते थे। इनकी लिखी हुई कितनी ही पुस्तकें हैं। "चन्द्रकला-भानुकुमार नाटक" और "धाराधर धावन" बहुत प्रसिद्ध हैं। पहिले ये 'रसिक-वाटिका' नामक कविता पुस्तक हर महीने निकालते थे। पीछेसे 'धर्मकुसुमाकर' नामका एक मासिक पत्र निकालने लगे थे। 'पूर्ण' जी थे तो कायस्थ, पर आचरण और विद्वत्तामें बड़े-बड़े विद्वान ब्राह्मणोंसे भी कम न थे। ये कानपुरमें वकालत करते थे और वहाँके नामी वकीलोंमें इनकी गणना थी। हिन्दी कविताके लिए बड़े ही दुर्भाग्यकी बात है कि वह "पूर्ण" जीके द्वारा पूर्ण न होने पायी। वह विद्वान्, वह नामी वकील और वह धर्मप्राण पुरुष केवल ४८ वर्षकी अवस्थामें ३० जून १९१५ को स्वर्गवासी हो गया।

अदेवनकी उर आनि अनीति,
निवाहनको सुर-पालन-रीति।
सुधारनको जनको अधिकार,
धरयो हरि वामनको अवतार ॥ १ ॥
बड़े जनको नहिं माँगन जोग,
करै छल-साधन में लघु लोग।
रमापति विष्णु असङ्ग अनूप,
धरयो यहि कारन वामन रूप ॥ २ ॥

अरे पग तीन धरा मत जान;
बुरे परिनाम भरो यह दान" ॥१३॥
चलौ बलि यों गुरु सों कर जोरि,
कह्यो नहिं सत्य सकौं प्रण तोरि।
धरा, धन, प्राण चहैं सब जाहिं,
महा करि दान कहूं फिरि नाहिं ॥१४॥
कियो तनु दीरघ विष्णु प्रताप;
लिये पग द्वै वसुधा नभ नाप।
तृतीय पुजावनको नृपराय;
दियो मुद सों निज अंग नपाय ॥१५॥
सुभक्त-प्रयत्न प्रसन्न रमेश;
निवास बताय रसातल-देश।
कह्यो, "सुनि दानि-शिरोमणि, तोहि
मिलै बर 'पूरन' जो रुचि होहि ॥१६॥
कह्यो बलि भूप बढ़ाय हुलास;
"यही बर मांगत हौं सुखरास।
प्रभात प्रभो! मम धाम पधारि;
सदा निज दर्शन देहु मुरारि" ॥१७॥
छल्यो बलिको नहिं भूतल नाप;
छले बलिके कर सों प्रभु आप।
सदा जय 'पूरन' विश्व महेंद्र,
सदाजय भक्त भविष्य-सुरेन्द्र ॥१८॥

प्रश्न

(१) भगवान्‌के इस अवतारका नाम 'वामन' क्यों पड़ा ? इस अवतारकी आवश्यकता क्यों पड़ी ?

(२) वामन और बलिकी बातचीत गद्यमें लिखो। इस बातचीतसे तुम किसे समझते हो कि वह जो कहता था वही उसका आन्तरिक आशय था ? कैसे ?

(३) शुक्राचार्यने बलिको क्यों और किन शब्दोंमें दान देनेसे मना किया ?

(४) विष्णुके लिए प्रयुक्त जितने शब्द इस पाठमें आये हों उन्हें छाँटो।

(५) सौरभ, प्रवीण, अनुराग, आदेश और अनीतिके विरोधी-अर्थसूचक (विलोम) शब्द लिखो।

—*—

है। यहाँकी जल वायुमें शैत्य है, इसीलिए दार्जिलिंग बंगाल सरकारका ग्रीष्म वास निर्दिष्ट हुआ है।

सन १८३५ ई० के पूर्व दार्जिलिंग सिक्कम राज्यके अधिकारमें था। उसी साल राजाने अंगरेजोंके स्वास्थ्य-सुधारके निमित्त रहनेके लिए दार्जिलिंग दे दिया। इस समय यह राजशाही विभागके अन्तर्गत है। यहाँ दीवानी और फौजदारी अदालतें हैं। पुलिस कर्मचारियोंकी संख्या भी अल्प नहीं है। दार्जिलिंग इस समय पूर्णरूपसे नगर होगया है। यहाँ साहेबोंका स्कूल है, गिरजा घर और होटल हैं। साहेबोंके लिए इडेन सैनिटोरियम और एतद्देशीय लोगोंके लिए लुई जुबिली सैनिटोरियम नामक दो स्वास्थ्यावास बने हैं। दोनोंक स्थानोंमें दो तीन रुपये प्रतिदिन देनेसे सुख स्वच्छन्दता पूर्वक रहा जा सकता है।

शिवपुर-बोटानिकल गार्डेनकी तरह दार्जिलिंग नगरमें भी एक उद्भिद्-विद्या-तत्व-शिक्षाका उद्यान है। [illegible] नाना प्रकारके फूलके पौधे काँचके घरोंमें सुरक्षित हैं [illegible] पौधे नष्ट न हो जायें, इसीलिए काँचके घर [illegible] है। इस उद्यानके भीतर एक छोटा-सा जादू घर है [illegible] जातीय पक्षियों और सर्पोंकी देहें यत्न पूर्वक [illegible] दार्जिलिंगके मान-मन्दिरके नामसे जो शैल प्रख्यात [illegible] चढ़नेसे एवरेस्टकी तरह अनेक शिखर दृष्टि गोचर [illegible] पर्वतकी ये चूड़ाएँ २०००० से लेकर २७००० फुट [illegible]

पृथ्वीपर जितनी वर्णमालाएं प्रचलित हैं उनको साधारणतः तीन श्रेणियोंमें रक्खा जा सकता है चीनदेशीय, फिनिशीय और भारतीय। चीन और जापान प्रभृति देशोंमें जिन वर्णमालाओंका प्रचलन है, उन्हें चीन-देशीय वर्णमाला कहते हैं। यहूदी, मुसलमान तथा यूरोपीय जातियोंकी भाषा जिन वर्णमालाओंमें लिखी जाती है, उन्हें फिनिशीय वर्णमाला कहते हैं। भारतवर्ष, पूर्व-उपद्वीप, तिब्बत, लंका, बालीद्वीप आदि स्थानोंमें भारतवर्षीय वर्णमाला प्रचलित है। इन वर्णमालाओंमें भारतवर्षीय वर्णमालाके निर्माणमें जिस प्रकारकी सूक्ष्म वैज्ञानिकता है, अन्य दो श्रेणियोंकी वर्णमालाओंमें उसका नितान्त अभाव है।

भारतीय आर्योंकी कल्पनाशक्ति और कवित्व-शक्तिने उनके साहित्यमें अपूर्व विकास पाया है। ऋग्वेद भारतीय साहित्यका सबसे पुराना ग्रन्थ है। अनेकोंके मतसे इसे संसारका सबसे पुराना ग्रन्थ कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं। रामायण और महाभारतके समान इतना बड़ा महाकाव्य संसारकी किसी भी भाषामें नहीं है। केवल बड़ाई ही नहीं काव्यकलाकी दृष्टिसे भी ये दोनों ग्रन्थ संसारमें सर्व श्रेष्ठ समझे जाते हैं।

भारतीय आर्योंकी सुतीक्ष्ण प्रतिभा केवल काव्य और साहित्य-रचनामें ही समाप्त नहीं हुई थी, ज्ञान-विज्ञानकी अन्यान्य शाखाओंमें भी उनके कृतित्व प्रस्फुटित हो उठे थे। यज्ञोंमें नाना प्रकारकी वेदियाँ बनाते समय आर्य ऋषियोंने ज्यामिति-

मिया (रेखागणित) के सूत्रोंका आविष्कार किया था। इस समय सभ्य संसारमें नौ अंकों और शून्यकी सहायतासे संख्या लिखनेकी जो प्रणाली प्रचलित है, उसके आविष्कारक भी भारतीय मनीषी ही थे। अंकगणितकी—जोड़, घटाव, गुणा और भाग करनेकी—प्रणालीका आविष्कार भी आर्य ऋषियोंनेही किया था। भारतवर्षनेही सर्व प्रथम संसारको बीजगणितकी शिक्षा दी थी। भारतीय पण्डितोंसे सर्व प्रथम महम्मद बेन मूसाने बीज-गणितकी शिक्षा लेकर अरब निवासियोंमें उसका प्रचार किया। अरबियोंसे यह क्रमशः नाना स्थानोंमें फैला। बीजगणितको अंगरेजीमें 'अलजबरा' कहते हैं। अरबीके 'एलजिबर' शब्दसे ही अंगरेजीके 'अलजबरा' शब्दकी उत्पत्ति हुई है। त्रिकोणमिति शास्त्रमें भी भारतीय आर्योंकी असाधारण व्युत्पत्ति थी।

ज्योतिष-शास्त्रका सर्वप्रथम आविष्कार भारतीयोंने किया। विषुव-संक्रान्त समस्त तत्त्व और ग्रहणके प्रकृत कारण का पता भारतीय आर्योंने ही लगाया। अनेक लोगोंकी धारणा है कि युरोपियनोंने ही सबसे पहले इस बातका आविष्कार किया कि "पृथ्वी अपने कक्षपर सूर्यकी चारों ओर घूमती है" किन्तु यह उनका भ्रम है। यूरपनिवासियोंके आविष्कारके बहुत वर्ष पहले भारतीय इन समस्त विषयोंसे अवगत थे।

चिकित्सा शास्त्रमें भारतीयोंकी निपुणता कम नहीं थी। वे खूब अच्छी तरह अस्त्र-चिकित्सा करना जानते थे। चरक

२७—बाल-भावना

(ले०—सूरदास)

जीवन-चरित्र—सूरदासजीका जन्म आगरा-मथुराकी सड़कपर रुन-कता गाँवमें संवत् १५४० में हुआ। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। पिताका नाम रामदास था। गऊघाटपर ये महा प्रभु वल्लभाचार्यके शरणापन्न हुए। महाप्रभुजीके आज्ञानुसार इन्होंने श्रीमद्भागवतके आधारपर 'सूर-सागर' नामक एक बृहद् ग्रन्थ बनाया। इसमें सवालाख पद हैं, पर मिलते हैं केवल ५-६ हजार ही! वल्लभाचार्यजीके पुत्र गुसाईं विट्ठलनाथजीने इन्हें ('अष्टछाप' में) सर्वोच्च स्थान दिया जो सर्वथा सार्थक है। ये जन्मान्ध नहीं थे, पीछे अन्धे हो गये थे। सूरदासजी हिन्दी-साहित्यके वाल्मीकि माने जाते हैं। इन्होंने जिस रसको उठाया, उसे पराकाष्ठाको पहुँचा दिया। वात्सल्य तो इनका बेजोड़ है। उपमाएँ अनूठी और भाव गाम्भीर्य पूर्ण हैं। प्रत्येक शब्द भक्ति रसमें डूबा हुआ है। वास्तवमें, सूर-दासजी ब्रजभाषा-साहित्य-गगनके सूर्य हैं। इनका गोलोकवास संवत् १६४० में पारसौलीमें हुआ।

पद

(१)

सोभित कर नवनीत लिये।
घुटुरुन चलत रेनुतन मंडित, मुखमें लेप किये॥
चारु कपोल लोल लोचन छबि, गोरोचनको तिलक दिये।
लट लटकन मानों मत्त मधुपगन माधुरी मधुर पिये॥

(४)

ा, मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ।
ार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी ॥
कहति बलकी बेनी ज्यों, ह्वै है लाँबी मोटी ।
गुहति न्हवावति ओंछति, नागिनीसी भ्वै लोटी ॥
दूध पियावति पचि-पचि, देत न माखन रोटी ॥
ाम चिर जीवौ दोउ भैया, हरि हलधरकी जोटी ॥

प्रश्न

) नीचे लिखे शब्दोंके अर्थ बताओ :—
घुटुरुन, रौंगे, कनियाँ, दधिदनियाँ,
) बालकपनका वर्णन अपनी भाषामें करो ।
) यशोदाजीकी क्या अभिलाषा थी ?
) तीसरे और चौथे पदोंका भावार्थ बताओ ।

———

बढ़ी-बढ़ी थी कि कवियों और पण्डितोंको हज़ारों रुपये दान कर देते थे। जिसने इनकी कोई चीज़ पसन्द की, वह तुरन्त उसकी नज़र हुई। दीप-मालिकामें इनके चिराग जलाते थे और देहमें लगानेके लिए तो सदैव तेलके स्थानपर इतर ही बर्ता जाता था। सारांश यह कि रुपयेको पानीकी तरह बहाते थे। इनकी यह दशा सुनकर महाराज काशी नरेशने एक दिन इनसे कहा, "बबुआ! घरकी देखकर काम करो।" इसपर इन्होंने तुरन्त उत्तर दिया, "हुजूर! यह धन मेरे बहुतसे बुजुर्गोंको खा गया है, अब मैं भी इसको खा डालूँगा।" सं० १९२७ में अपने छोटे भाईसे अलग हुए थे, और थोड़े ही वर्षोंमें अपने हिस्सेकी समस्त पैतृक सम्पत्ति उड़ा डाली। ननिहालकी कई लाख रुपयेकी—सम्पत्तिके ये भाई उत्तराधिकारी थे। इनकी उड़ाऊ दशा नानीने कुल सम्पत्तिका हिबानामा इनके अनुजके दिया। परन्तु बिना इनकी रज़ामन्दीके यह ठीक न था। अपनी नानीके कहनेपर कर दिये और इस प्रकार अपने म देनेमें कुछ भी आगा पीछा न दरिया दिल आदमी कर म इतनी अधिक थी कि होलीमें कमरमें बाँधकर कबीर गाते हुए पहला अर्थ लकी अगरेजी म

गोंके लिए कोई झूठ बोल सकता है। भारतेन्दु उस दिन कुछ न कुछ अवश्य करते थे। एक बार आपने नोटिस दिया कि महाराज विजयानगरमकी कोठीमें एक यूरपके विद्वान् सूर्य और चन्द्रमाको पृथ्वीपर उतारेंगे। हज़ारों मनुष्य वहांपर एकत्र हुए, परन्तु कुछ न देखकर लज्जित हो वहांसे लौट गये। एक बार प्रकाशित कर दिया कि बड़े-बड़े प्रसिद्ध गायक हरिश्चन्द्र स्कूलमें मुफ्त गाना सुनावेंगे। जब हज़ारों आदमी एकत्र हुए, तब परदा खुला और एक मनुष्य विदूषकके वस्त्र पहने उलटा तानपुरा लिये घोर खरस्वर करने लगा। यह देख लोग हंसते हुए शरमाकर लौट गये। एक बार इन्होंने एक मित्रसे नोटिस दिला दिया कि एक मेम रामनगरके पास खड़ाऊंपर सवार होकर गंगाजीको पार करेगी और खड़ाऊं न डूबेगी। हज़ारों लोग एकत्र हुए, किन्तु न कहीं मेम न खड़ाऊं! पीछे सब समझ गये कि यह भी एक मज़ाक था। भारतेन्दुने सुन्दर कपड़े, खिलौने, फोटो एवं अपूर्व पदार्थोंका संग्रह सदैव किया। इनको तस्वीरोंका संग्रह बहुत ही प्रिय था। इन्होंने बड़ा परिश्रम करके बहुतसे बादशाहों एवं अन्य महात्माओंकी तस्वीरें एकत्र की थीं, परन्तु एक हज़रतने आकर इनकी बड़ी प्रशंसा की और इन्हें अपनी आदतसे लाचार होकर वह संग्रह उन्हें दे डालना पड़ा। इसी दानके पीछे लोगोंने इन्हें पछताते देखा। फिर इन्होंने ५००) तक व्यय करके वह संग्रह उन हज़रतसे मांगना चाहा, परन्तु उन्होंने न दिया। इनके साथ

बैठनेमें लोगोंका जी इतना प्रसन्न रहता था कि कभी बिना उठता ही नहीं था। चाहे जितना शोक क्यों न हो, परन्तु इनके पास पहुँचे कि चित्त प्रफुल्लित हो गया। अपने स्वभावका इन्होंने स्वयं बड़ाही बढ़िया एवं यथार्थ वर्णन किया है। यथा—

"सेवक गुनीजनके चाकर चतुरके हैं,
कबिनके मीत चित हित गुन गानीके।
सीधेनसों सीधे, महा बाँके हम बाँकन सों,
'हरीचन्द' नगद दमाद अभिमानीके।
चाहिवेकी चाह, काहूकी न पद परवाह,
नेहके दिवाने सदा सूरत निमानीके।
सरबस रसिकके, सुदास-दास प्रेमिनके,
सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधारानीके।"

इस महाकविने केवल ३५ वर्ष इस संसारको सुशोभित किया और प्रायः १८ वर्षकी अवस्थासे काव्य रचना आरम्भ की। पहले ये केवल गद्य लिखते थे, पीछे पद्य भी लिखने लगे। इस १७ वर्षके अल्प कालमें इन्होंने ७० ग्रंथ बनाये। इनके द्वारा सम्पादित संगृहीत या उत्साह देकर बनवाये हुए और भी ग्रन्थ वर्तमान हैं। खड्गविलास बाँकीपुरसे इनके मुख्य-मुख्य ग्रन्थ "हरिश्चन्द्र कला" के नामसे छः भागोंमें प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रने सामाजिक

आनन्दोंको भोगते हुए हिन्दी-साहित्य और हिन्दू-समाजकी सेवासे अपना नाम सदाके लिये संसारमें अमर कर दिया।

(हिन्दी नवरत्नसे संगृहीत)

प्रश्न

(१) भारतेन्दु हरिश्चन्द्रका जीवन-चरित्र संक्षेपमें लिखो।

(२) इनके बनाये हुए कितने ग्रन्थ मिलते हैं? यदि तुमने इनका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ पढ़ा है तो उसका नाम बताओ।

(३) भारतेन्दुने अपने स्वभावका वर्णन जिस पद्यमें लिखा है, उसका अर्थ बताओ।

(४) 'नहके दियाले' इस मुहावरेका प्रयोग अपने वाक्यमें करो।

(५) इस पाठके प्रथम परिच्छेद में पाँच विशेषण ढूँढ़ो और उनका पदपरिचय बताओ।

२९—कबीरके उपदेश

(ले०—महात्मा कबीरदास)

लेखक-परिचय—महात्मा कबीरदासका जीवन-काल अनुमानतः सं० १४५५—१५७५ है। ये हिन्दू-कुलमें उत्पन्न हुए, परन्तु एक जुलाहेके घर पले। रामनामके भक्त और स्वामी रामानन्दके शिष्य थे। हिन्दू और मुसलमान दोनोंके ये गुरु थे। दोनोंके मतोंकी इन्होंने कड़ी आलोचना की। इनके समान खरी बात कहनेवाले कम लोग हुए हैं। इनके कहनेका ढंग निराला है। परन्तु इन्होंने जो कुछ कहा है, अनुभवपूर्ण है। इनकी साखियाँ खूब मशहूर हैं। सूर, तुलसी और मीराके भजनोंकी भाँति इनके भजन भी अत्यन्त लोकप्रिय और प्रचलित हैं। ये उच्च कोटिके कवि, समाज सुधारक और भगवद्भक्त थे।

कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगा सुख होत है, और ठगे दुख होय ॥ १ ॥
ऐसी बानी बोलिये, मनका आपा खोय।
औरनको सीतल करै, आपहु सीतल होय ॥ २ ॥
जगमें बैरी कोइ नहिं, जो मन सीतल होय।
या आपाको डारि दे, दया करै सब कोय ॥ ३ ॥
मारी हो सो ऊतरै, कलह, कष्ट औ मीच।
हारि मरै सो साधु है, हानि मरै सो नीच ॥ ४ ॥
न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जलमें रहै, धोये बास न जाय ॥ ५ ॥

यहाँ इसमें विशेषता है। यहाँ समाजमें ज़मींदारोंका बड़ा मान है। देशमें हर किसीकी इच्छा रहती है कि कुछ न कुछ खेती करें। जहाँ कुछ संचय किया या अपने काममें हुई त्यों कि झट यही इच्छा होती है कि कुछ धरती लेकर खेती—चाहे जैसी सड़ी गलिति क्यों न हो—करें। फिर ऐसा न करें तो और क्या करें। यहाँ पर अपनी कमाई—अपने संचित धनको दूसरे रुजगार व्यवहारमें लानेके उपाय भी तो बहुत कम हैं। यहाँ बैंकोंमें रुपया जमा करनेकी चाल बिलकुल नहीं है। यह लोगोंको अब तक पसन्द नहीं है। नये व्यवसायोंका भरोसा कम है, इनमें अपनी पूँजी नहीं लगा सकते, इस कारण यहाँ धरतीपर रुपया लगाना ही सबसे अच्छा और बिना जोखिमका काम समझा जाता है।

अधिकांश लोग खेतीसे ही जीते हैं, पर उनमें [illegible] नहीं कर सकते। यदि वृष्टि हुई तो फसल हुई, नहीं तो मरी गयी। जब अकाल पड़ता है तब खेतीवालोंको कोई उपाय नहीं सूझता। उनके पास संचित धन नहीं रहता कि दुर्भिक्षके दिनोंमें भी किसी तरह दिन काटें। इससे अकालमें इनकी [illegible] आ जाती है, वे भूखों मरने लगते हैं। [illegible] [illegible] अकालके कारण [illegible] [illegible] बहुत बढ़ गयी है। यह देखकर दुर्भिक्ष कमीशनने [illegible] दी कि लोगोंको [illegible] [illegible] और किसानोंको [illegible] [illegible] देनेका प्रबन्ध न [illegible]

जाहिर। यदि लोग रोजगार-धन्धे भी करने लगेंगे तो अकालसे उनका कष्ट नहीं पहुंचेगा। यह सलाह बहुत अच्छी है। पर रोजगारोंकी ओर जानेसे ही दुःख दूर न हो जायगा। मान-लिया कि देशमें दुर्भिक्ष पड़गया और खेतिहरोंको भूखे मरनेकी नौबत आयी। उस हालतमें दूसरे पेशेवालेकी भी हालत बुरी हो जायगी। मिलें, पुतली घरोंको भी काम बन्द करना पड़ेगा। कमसे कम काम करना पड़ेगा, क्योंकि जब खेति-हरोंको खानेको ही नहीं मिलेगा तब पुतली घरोंकी चीजें कौन खरीदेगा? कारखानियोंके माल धरेही रक्खे रह जायंगे। जब खेतोंमें जूट, कपासकी कमी होगी तो पुतली घरोंमें कच्चे माल कहांसे आवेंगे? इसलिए कहा जाता है कि सिर्फ रोजगारोंमें लग जानेसे ही दुःख दरिद्रता दूर नहीं होगी। साथ ही साथ खेतीकी भी उन्नति करनी पड़ेगी। नये औजारोंसे नयी रीतिसे खेत जोतकर, खाद डालकर, पानी पटाकर खेतीकी तरक्की करनी पड़ेगी। इससे दो लाभ होंगे, एक तो इन औजारोंकी मांग बढ़ जायगी जिससे देशमें इनके लिए बहुतसे कारखाने खुल पड़ेंगे और दूसरा यह कि उपज बढ़ जानेसे खेति-हरोंके खाने पीनेके अतिरिक्त अन्य आवश्यक वस्तुओंको मोल लेनेके लिए यथेष्ट धन बच जायगा। इस धनसे वे लोग कपड़े-लत्ते, जूते, छाते इत्यादि सामान खरीद सकेंगे। इससे भी उद्योग-धन्धोंके फैलनेमें बड़ी सुगमता होगी। उपज आजसे दूनी होजाय तो कपड़े-लत्ते, जूते, छाते, इत्यादि आवश्यक

वस्तुओंकी माँग चौगुनीसे भी अधिक होजाय। कारण यह है कि उपज दूनी होनेसे भी किसान खाने पीनेमें चावल, आटा, दालमें जितना पहले खर्च करता था, उतना या उससे कुछ ही अधिक खर्च करेगा। उपज दूनी होनेसे उसका पेट तो दूना नहीं हो सकता। इसलिए जो उसकी बचत होगी वह कपड़े-लत्तेकी-सी जरूरी चीजोंमें लग जायगी। इससे इनकी खपत बहुत बढ़ जायगी और यदि किसान लोग अपने मालको थोड़ा बहुत तैयार करना सीखें, यदि धानके बदले चावल, गेहूँके बदले आटा बेचना शुरू करें तो औजारोंकी माँग और भी बढ़ जायगी। औद्योगिक कमीशनने हिसाब लगाकर देखा है कि यदि देशमें कलोंसे पानी पटाने और ईख पेरनेकी चाल चल जाय तो सिर्फ इन्हीं दो मदोंमें ८० करोड़ रुपयोंकी पूँजीके कल-पुर्जे लग जायँगे। फिर इनमें सालाना मरम्मतके लिए भी कुछ लगेगा। इस तरह आप देख सकते हैं कि खेतीकी तरक्की करनेसे धन्धोंके बढ़ जानेका कितना बड़ा मौका है। लोगोंको केवल रोजगारमें ही भेजनेसे काम न चलेगा। साथ ही साथ खेतीकी उपज बढ़ानी होगी।

खेतीकी उपज बढ़ाई जा सकती है। दूसरे देशमें परिश्रम करके औजारोंकी सहायतासे अधिक अन्न उपजाया जाता है, इसको औद्योगिक कमीशनने दर्शाया है। उसने लिखा है कि भारतवर्ष और इंगलैंड दोनों जगहोंमें गेहूँ और जव बोये जाते हैं, पर जहाँ इंगलैंडमें एकड़ पीछे १९१९ पाउण्ड (वजन)

और अकालके रहते हुए भी जन संख्या बढ़ रही है। खाने-वालोंकी जितनी वृद्धि होती है, उतनी वृद्धि नये खेतों और उनकी उपजमें नहीं होती! इस कारण खाद्य पदार्थ बाहरसे मँगाने पड़ते हैं।

क्योंकि कलके बने अच्छे मालके सस्ते पड़नेके कारण हाथोंके बने अच्छे मालको कोई नहीं पूछता। इससे देशी पेशेवाले गरीब होगये हैं। उन्होंने या तो पेशा छोड़कर रोजाना मजदूरी करना और कलोंमें काम करना शुरू कर दिया है, या वे खेती कर दिन काटने लगे हैं। इससे भी खेती करनेवालोंकी संख्या बढ़ रही है।

देशमें उत्तम सुरक्षित बैंकोंका खूब प्रचार न होनेके कारण और नये व्यवसायोंपर भरोसा न कर सकनेके कारण भी लोगोंको अपनी पूँजी खेतीमें लगानी पड़ती है। इससे आज-कल उससे ज्यादा लोग खेती बारीमें लगे हुए हैं।

इससे छुटकारा पानेके दो उपाय हैं। एक तो उपज बढ़ानेका प्रयत्न करना और दूसरे लोगोंको धन्धोंमें लगाना। दोनों एक साथ हों, नहीं तो पूरा फल नहीं मिलेगा। खेतीकी अवस्था सुधारनेके लिए नये औजारों, नये आविष्कारोंसे सहायता लेनी पड़ेगी। शिल्पियोंको मामूल तैयार करने, आदि इनमें जैसे नवनवीन उद्योग धन्धोंमें लगा देना होगा। अपने दस्तकारोंको देशकी मर्यादाकी रक्षा करते हुए विदेशी कारीगरोंसे मिलान कर अर्थोंसे आगे बढ़ते हुए, अधिकतर उन्नति

तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै।
दुश्मन दावागीर होय, तिनहूँ को झारै॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो धुरके बाठी।
सब हथियारन छाँडि, हाथ महँ लीजै लाठी॥

(४)

बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो, जगमें होत हँसाय॥
जगमें होत हँसाय, चित्तमें चैन न पावै।
खान पान सनमान, राग रंग मनहि न भावै॥
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना बिचारे॥

प्रश्न

(१) गिरिधर रायने इन दो मनुष्योंको क्या उपदेश दिया है?
(२) अच्छे मित्रकी क्या पहचान है?
(३) लाठीसे क्या-क्या फायदे हैं?
(४) बिना बिचारे काम करनेसे क्या-क्या हानियाँ हैं?
(५) नीचे लिखी पंक्तियोंके [illegible] :—
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।"

है। अम्बाजी, गोरखनाथ और गुरु दत्तात्रय, ये तीन हिन्दू-मन्दिर हैं। गिरनारके शिखरके ऊपर सबसे ऊँचा मन्दिर गुरु दत्तात्रयका है, जहाँ उनकी पादुका बनी हुई है—कोई मूर्ति इस मन्दिरमें नहीं है।

जूनागढ़के शहरके ऊपर एक गढ़ है, जो ऊपर कोट कहलाता है। वहाँ राजा रावखेंगार और उनकी रानी राणकदेवीका महल है, जो बारह सौ साल पहलेकी इमारत है। ऊपर कोटकी दीवारें, दरवाजे और गोपुर भी उसी समयके हैं और बहुत ही सुन्दर हैं।

गिरनारकी चढ़ाईके लिए लोगोंने चन्दा बनाकरके पत्थरके ज़ीने बनवाये हैं। गुरु दत्तात्रयके शिखर तक ६६६० ज़ीने चढ़ने पड़ते हैं। नरसी मेहता जो पश्चिमी भारतके बड़े सन्त हो गये हैं, जूनागढ़के ही रहने वाले थे। गिरनार पहाड़के रास्ते पर एक दामोदरकुण्ड है। वहाँकी गिरि, झाड़ी और पानीका दृश्य बहुत ही चित्ताकर्षक है। इस कुण्डमें मेहताजी स्नान करते थे। उनकी जीवनीकी एक खास कहानी यह है कि नागर ब्राह्मण होते हुए भी उन्होंने अन्त्यजोंके घरमें जाकर हरिकीर्तनका उत्सव मनाया था।

काठियावाड़ कृष्ण भूमि कहलाता है। श्रीकृष्णजीकी राजधानी द्वारका और सोमनाथ, जहाँ सोमनाथजीका मन्दिर है और जहाँ भगवान् कृष्णने देहत्याग किया था—ये सब स्थान

काठियावाड़में ही है। काठियावाड़ नृत्य और गायनका देश है और यहाँकी स्त्रियाँ अनेक प्रकारके सुन्दर नृत्य करती हैं। यहाँके "गरबा" और "रास" प्रसिद्ध हैं। परन्तु इनके अलावा और बहुत प्रकारके नृत्य हैं। जैसे पुरुषोंका नृत्य जो यहाँके काश्तकार बहुत खूबीसे नाचते हैं। काठियावाड़की स्त्रियाँ बहुत रूपवती मानी जाती हैं और इनका पहरावा जो लँहगा और ओढ़नी है, बहुत सुन्दर होता है।

काठियावाड़में कई तीर्थस्थान हैं। इनमेंसे दो स्थान बड़े माने जाते हैं—एक द्वारका और दूसरा सुदामापुरी जिसका आधुनिक नाम पोरबन्दर है और जहाँ सुदामाजीका एक बहुत पुराना मन्दिर है। पुराने मन्दिर और भी कई हैं, जिनमेंसे एक वेरावलमें है, जो छठी सदीसे अरबोंके और इतर जहाजोंके लिए दीपस्तम्भका काम दे रहा है।

गोहिलवाड़-प्रान्तमें शत्रुंजयका प्रसिद्ध पहाड़ है, जिसके ऊपर जैनोंके बहुत सुन्दर मन्दिर हैं। यह जैन-यात्रियोंका बहुत बड़ा तीर्थ है और हर साल सैकड़ों लोग यहाँ आते हैं।

काठियावाड़ अपने अच्छे घोड़ोंके सिवा बहुत उत्तम गायों और भैंसोंके लिए भी मशहूर है। सारे एशिया भरमें काठियावाड़ ही एक देश है जहाँ सिंह जंगलमें पाया जाता है। योरोपीय लोगोंका पहले यह ख़याल था कि अफ्रिकाका सिंह काठियावाड़में लाकर छोड़ दिया गया है। परन्तु हिन्दुस्तानमें

पुराने जमानेमें कई जगहोंपर सिंह थे और मुगलोंके समयमें जहाँगीर बादशाहने अपनी तवारीखमें लिखा है कि दिल्लीसे लाहौर जाते हुए वे सिंहका शिकार खेलते थे और उस समयके चित्रोंमें शेर और सिंह दोनोंका शिकार दिखाया गया है। काठियावाड़का सिंह जंगलमें रहता है और अफ्रिकाका सिंह उजाड़में रहता है—पेड़ोंके जंगलमें नहीं। दोनों जानवर बिलकुल निराले हैं जैसे हिन्दुस्तानका हाथी अफ्रिकाके हाथीसे भिन्न है—आश्चर्यकी बात यह है कि संस्कृत शब्द सिंह और अफ्रिकन शब्द सिंबा कुछ एक-से मालूम देते हैं।

काठियावाड़के लोग प्राचीन कालसे मशहूर व्यापारी हैं। अफ्रिकाका देश इन्होंने सदियोंसे आबाद किया है और जावा द्वीपतक व्यापार करते रहे हैं। पहले योरपीय यात्री—वास्को डिगामाकी काठियावाड़के लोगोंसे आशा अन्तरीपके पास भेंट हुई थी और उनके दिखाये हुए रास्तेमें चलकर वह सूरतकी ओर आ रहा था, परन्तु तूफानकी वजहसे उसके जहाज़ दक्षिणको बह गये और वह कालीकट पहुँच गया।

काठियावाड़में कई मशहूर व्यक्तियोंका जन्म हुआ है। आधुनिक कालमें स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मागांधी यहीं पैदा हुए। स्वामी दयानंदजीने मोरवी-रियासत (हालाप्रांतके) छोटेसे गाँव टंकारमें जन्म लिया था। महात्माजीका जन्मस्थान सुदामपुरी है, परन्तु उनकी बाल्यावस्था और यौवना-

वस्था राजकोटमें व्यतीत हुई, जिस नगरके राजाके उनके पिता प्रधान मंत्री थे।

प्रश्न

(१) काठियावाड़ का पुराना नाम बताओ। काठियावाड़ नाम क्यों और किसने रक्खा ?

(२) सोरठका शुद्ध रूप क्या है ?

(३) आज कल सोरठ किसके अधिकार में है ?

(४) काठियावाड़ किन-किन बातोंके लिए प्रसिद्ध है ?

(५) नरसी मेहताके विषयमें क्या जानते हो ?

(६) सुदामा पुरीका आधुनिक नाम बताओ।

(७) "काठियावाड़की विशेषता" विषयपर एक छोटा निबन्ध लिखो

—*—

परस्परावलम्बसे उठो तथा बढ़ो सभी।
अभी अमर्त्य—अङ्कमें अपङ्क हो चढ़ो सभी॥
रहो न यों कि एकसे न काम और का सरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्यके लिए मरे॥

(५)

चलो अभीष्ट मार्गमें सहर्ष खेलते हुए।
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए॥
घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी।
अतर्क एक पन्थके सतर्क पन्थ हों सभी॥
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्यके लिए मरे॥

प्रश्न

(१) इन पद्योंसे तुम्हें क्या उपदेश मिलता है?
(२) तीसरा छन्द कण्ठस्थ करो।
(३) त्रिलोक नाथका समास विग्रह करो।

———

बोलनेकी शक्ति । अनुकरणीय=अनुकरण करनेके योग्य । भ्रमात्मक धारणा=भ्रान्ति युक्त विचार । पारलौकिक=परलोकमें अच्छा फल देनेवाला । स्वार्थ सुदगर्जी । यथार्थ=ठीक, वास्तवमें ।

५—प्यारा हिन्दुस्तान

सर्मगल=कल्याण युक्त । विरद=कीर्ति, बड़ाई । सरसिज=कमल ।

६—संसारकी सबसे बड़ी कहानी

नयनाभिराम=सुन्दर । सूरमा=शूर वीर । आसुरी=राक्षसी । कृत्य कार्य । उपासक=उपासना करनेवाला, भक्त । आर्तनाद=दुःख भरा चीत्कार

७—नीतिके दोहे

गलीत=दुर्दशाग्रस्त । श्रुति=वेद । समृति=स्मृति, धर्मशास्त्र । निबल=कमजोर । सरोज=कमल । जोय=देखना । कनक=सोना, धतूरा । अरक=अकवन, सूर्य । उदोत=प्रकाश । सतरौंहैं=क्रोधयुक्त ।

८—कल्पनाशक्ति

कल्पनाशक्ति=बात गढ़नेका सामर्थ्य । प्राक्तन=पहलेका । आकल्पान्त=प्रलय तक । फरागत=छुट्टी । दरोग़=झूठ । क़िब्लेगाह=पिता । ओर छोर=अन्त । किनका=अन्नका टूटा हुआ दाना । हेय=त्यागने लायक । निष्कर्ष=सारांश । परिणत=बदला हुआ । कल्पना=विचार । जल्पना=गप करना ।

९—हिन्दी

अग्रवन=आगरा । लाल=लल्लूजीलाल । परिजन=सर्व साधारण जनता । प्रभृति=इत्यादि । रिझवार=गुणग्राही, प्रसन्न होनेवाले । करि=करो । मसान=श्मशान । अरविन्द=कमल ।

१०—वेदोंका उपदेश

मूल आधार=बुनियाद। प्रतिपादक=सिद्ध करने वाला। मन्त्र द्रष्टा= जिन ऋषियोंके प्रति वेदोंका मन्त्र प्रकाशित हुआ है, उन्हें मन्त्र द्रष्टा कहते हैं। अनुसरण करो=अनुयायी बनो। क्षमता=योग्यता, शक्ति। अभिज्ञ=जानकार।

११—वनशोभा

चारु=सुन्दर। साल=सागौन। विशाल=बड़े बड़े। [illegible] अभाव=अटूट। विभ्रम=वेग, भ्रमण। सात्विक=सतोगुणयुक्त।

१२—माननीय श्रीनिवास शास्त्री

व्यक्त करना=प्रकट करना। तीव्र=तीक्ष्ण। [illegible] पसन्दगी। उपलक्ष्यमें=निमित्त, दृष्टिसे। स्वर्णपदक=[illegible] किया=इनाम दिया।

१३—समयका फेर

चुरमुर=सूखा हुआ। घुल-घुल कर बातें [illegible] झांटियों=गुच्छोंपर। झांटे लेती=झूलती हुई। [illegible] आवाज़। भुजंग=सर्प।

१४—गोपाल [illegible]

१५—रहीमके दोहे

सरवर=तालाब। रीत=प्रकारसे। जीबो=जीना। दीबो=देना। अमर-वेलि=आकाश बँवरि। आखर=अक्षर। खुलिआवें=मुँहसे हँसने। पुरुषार्थ=प्रयत्न। हय=घोड़ा। बद्दरी=हूदी, पक्षी विशेष। पति=इज्जत।

१६—पनडुब्बी जहाज़

आविष्कार=ईजाद। हौसले=इच्छाएँ। नेस्तनाबूद=मटियामेट। विद्रोही=बागी। अभिलाषा=इच्छा। सफलता=कामयाबी।

१७—मन

मुद=आनन्द। तूल=रुई। रंक=दरिद्र। वसुधा=पृथिवी। परिपीड़न=कष्ट।

१८—फा-हियानकी भारत-यात्रा

वृतान्त=समाचार, खबर। एकत्र=इकट्ठा। स्तूप=स्तम्भ। संघाराम=बौद्ध आश्रम। अश्रुधारा=आँसुओंकी धार। निर्विघ्न=सही सलामत। कृत-कृत्य=कृतार्थ।

१९—क्या से क्या

धाक=रोबदाब। हुन=सोना।

२०—रेतारका चमत्कार

तोहफ़ा=उपहार। पाश्चात्य=पश्चिमीय। महत्वपूर्ण=गौरवयुक्त, भारी। मनोविनोद=आमोद प्रमोद, मनको प्रसन्न करनेवाला। वाद्य-बाजा। कार्यपद्धति=कामका ढंग। सूक्ष्म=बारीक। शब्द-ग्राही=आवाज़को पकड़ने वाला। प्रेषित=भेजा हुआ। कौतूहल जनक=उत्सुकता पैदा करने वाला, आश्चर्यजनक।

विभिन्न=तरह तरह। वर्गोंके=रंगोंके। मेघ-मुक्त=बादल रहित। अशपन=निमका नाश न हो। विस्मय=आश्चर्य। त्रिभुवनि=ईश्वर। कांचनाभा=सोनेकी सी कान्ति। पर्यटक=भ्रमणकारी, यात्री। पर्याप्त=पूरा। शृगया=शिकार। शैम्य=डंक। अमात्य=मन्त्री। श्री=शोभा। कूपमण्डूक=कुएँका मेढ़क। प्रशान्त=विशाल।

२५—सदुपदेश

परमात्म=मुक्ति। सलिल=जल। समागम=संसर्ग। बाजि=घोड़ा। जवास=हिंगुआ, एक प्रकारका जंगली कँटीदार पौदा।

२६—भारतका दान

अतीत=बीता हुआ। निर्दिष्ट=निश्चित। बर्बर=असभ्य, जंगली। सुतीक्ष्ण=तीव्र। प्रतिभा=विचार-शक्ति। कृतित्व=रचनाका भाव। प्रस्फुटित=प्रकट। व्युत्पत्ति=योग्यता, ज्ञान। विषुव=सूर्यके ठीक भूमध्य रेखाके सामने पहुँचनेका समय। अवगत=ज्ञानकार। आलोचना=किसी वस्तुके गुण-दोषपर विचार करना।

२७—बाल भावना

नवनीत=मक्खन। घुटुरुन=घुटनेके बल। रेनु=धूल। मधुपगन=भौंरे। कल्प=युग। रटैं=रटे। पेखत=देखत। अँधवारि=आँधी। छनियाँ=गोद। दधिदनियाँ=हाँडी, दही रखनेका पात्र। जुडनियाँ=मुंडन। बेनी=चोटी। ओछति=करी करती है। म्वै=जमीनपर।

२८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रखर=तीक्ष्ण, तेज। पैतृक=बापदादाओंकी। सम्पन्न=धनी। जिन्दा-दिली=सजीवता। पद्म=कमल। नूपुर=मोर। हिवानामा=दानपत्र। दरियादिल=उदार। हजरत=महाशय। गुनगाही=गुणग्राहक। नेह=प्रेम।

विभिन्न=तरह तरह। वर्णोंके=रंगोंके। मेघ-मुक्त=बादल रहित। अक्षय=जिसका नाश न हो। विस्मय=आश्चर्य। विश्वपति=ईश्वर। कांचनाभा=सोनेकी सी कान्ति। पर्यटक=भ्रमणकारी, यात्री। पर्याप्त=पूरा। मृगया=शिकार। दौत्य=दूतक। अमात्य=मन्त्री। श्री=शोभा। कूपमण्डूक=कुएँका मेढ़क। प्रशस्त=विशाल।

२५—सदुपदेश

परमार्थ=मुक्ति। सलिल=जल। समागम=संसर्ग। वाजि=घोड़ा। जवास=हिंगुआ, एक प्रकारका जंगली कांटेदार पौधा।

२६—भारतका दान

अतीत=बीता हुआ। निर्दिष्ट=निश्चित। बर्बर=असभ्य, जंगली। सुतीक्ष्ण=तीव्र। प्रतिभा=विचार-शक्ति। कृतित्व=रचनाका भाव। प्रस्फुटित=प्रकट। व्युत्पत्ति=योग्यता, ज्ञान। विषुव=सूर्यके ठीक भूमध्य रेखाके सामने पहुँचनेका समय। अवगत=जानकार। आलोचना=किसी वस्तुके गुण-दोषपर विचार करना।

२७—बाल भावना

नवनीत=मक्खन। घुटुरुन=घुटनेके बल। रेनु=धूल। मधुपान=भौंर। कल्प=युग। रहै=रहें। पेखन=देखन। अँधवारि=आँधी। कनियाँ=गोद। दधिदनियाँ=हाँड़ी, दही रखनेका पात्र। जुठनियाँ=जूठन। चेनी=चोटी। ओंटनि=कंघी करती है। भ्वै=जमीनपर।

२८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रखर=तीक्ष्ण, तेज। पैतृक=बापदादोंकी। सम्पन्न=धनी। जिन्दादिली=मर्दानगी। पद्म=कमल। नज़र=भेंट। हिबानामा=दानपत्र। दरियादिल=उदार। हज़रत=महाशय। गुनगाही=गुनग्राहक। नेह=प्रेम।

बाने=बाना । निमानी=नियमानुकूल आचरण करनेवाला व्यक्ति, विनीत ।

२९—कबीरके उपदेश

आना=खुदगर्जी । मीच=मृत्यु । साँची=सचाई । हेत=प्रेम । परमारथ=
दूसरेकी भलाई ।

३०—उद्योग-धन्धे

पुतली घर=कपड़े बुननेके कारखाने । दुर्भिक्ष=अकाल । अपरोक्ष=
सामने, सम्मुख । उदर-पूर्ति=पेट भरना ।

३१—गिरिधरकी कुण्डलिया

ठाउँ=स्थान । बेगरजी=बे मतलब । दावागीर=दावा करनेवाला ।
धुरके धारी=मर्यादापालक ।

३२—काठियावाड़

इमारत=भवन । गोपुर=किलेका फाटक । जीने=सीढ़ियाँ । चित्ताकर्षक=
मनमोहक । अन्त्यज=अछूत ।

३३—देवताओंका फैसला

कृपादृष्टि=मेहरबानीकी नज़र । निर्णय=फैसला ।

३४—वही मनुष्य है

पशुप्रवृत्ति=पशुओंका काम । घुमती=गूँजती । अन्तरिक्ष=आकाश ।
परस्परावलम्ब=आपसकी सहायता । अभीष्ट=इच्छित । अतर्क=बिना तर्क ।
सतर्क=सावधान

विभिन्न=तरह तरह। वर्णों के=रंगोंके। मेघ-मुक्त=बादल रहित। अक्षय जिसका नाश न हो। विस्मय=आश्चर्य। विश्वपति=ईश्वर। कांचनामा सोनेकी सी कान्ति। पर्यटक=भ्रमणकारी, यात्री। पर्याप्त=पूरा। मृगया शिकार। शैत्य=ठंढक। अमात्य=मन्त्री। श्री=शोभा। कूपमण्डूक=कुएँके मेढ़क। प्रशस्त=विशाल।

२५—सदुपदेश

परमारथ=मुक्ति। सलिल=जल। समागम=संसर्ग। बाजि=घोड़ा जवास=हिंगुआ, एक प्रकारका जंगली कांटेदार पौदा।

२६—भारतका दान

अतीत=बीता हुआ। निर्दिष्ट=निश्चित। बर्बर=असभ्य, जंगली सतीक्ष्ण=तीव्र। प्रतिभा=विचार-शक्ति। कृतित्व=रचनाका भाव। प्रस्फुटित=प्रकट। व्युत्पत्ति=योग्यता, ज्ञान। विषुव=सूर्यके ठीक भूमध्य रेखाके सामने पहुँचनेका समय। अवगत=जानकार। आलोचना=किसी वस्तुके गुण-दोषपर विचार करना।

२७—बाल भावना

नवनीत=मक्खन। घुटुरुन=घुटनेके बल। रेनु=धूल। मधुपगन=भौंरे कल्प=युग। रई=रई। पेखन=देखना। अँधवारि=आँधी। कनियाँ=गोद दधिदनियाँ=हाँडी, दही रखनेका पात्र। जुठनियाँ=जूठन। पंनी=चोटी ओछति=कंघी करती है। म्वै=जमीनपर।

२८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रखर=तीक्ष्ण, तेज। पैतृक=बापदादोंकी। सम्पन्न=धनी। जिन्दादिली=सजीवता। पद्म=कमल। नज़र=भेंट। दिवानामा=दानपत्र। दरियादिल=उदार। हज़्म=महानाश। गुनगाही=गुणग्राहक। नेह=प्रेम।

=पागल। निमानी=नियमानुकूल आचरण करनेवाला व्यक्ति, विनीत।

२९—कबीरके उपदेश

आपा=खुदगर्जी। मीच=मृत्यु। साँची=सचाई। हेत=प्रेम। परमारथ=
की भलाई।

३०—उद्योग-धन्धे

पुतली घर=कपड़े बुननेके कारखाने। दुर्भिक्ष=अकाल। अपरोक्ष=
मने, सम्मुख। उदर-पूर्त्ति=पेट भरना।

३१—गिरिधरकी कुण्डलिया

ठाउँ=स्थान। वेगरजी=बे मतलब। दावागीर=दावा करनेवाला।
तुके बाँदी=मर्यादापालक।

३२—काठियावाड़

इमारत=भवन। गोपुर=किलेका फाटक। जीने=सीढ़ियाँ। चित्ताकर्षक=
मनमोहक। अन्त्यज=अछूत।

३३—देवताओंका फैसला

कृपादृष्टि=मेहरबानीकी नज़र। निर्णय=फैसला।

३४—वही मनुष्य है

पशुवृत्ति=पशुओंका काम। कृजती=गूँजती। अन्तरिक्ष=आकाश।
परस्परावलम्ब=आपसकी सहायता। अभीष्ट=इच्छित। अतर्क=बिना तर्क।
सतर्क=सावधान।

विभिन्न=तरह तरह। वर्गों के=रंगोंके। मेघ-मुक्त=बादल रहित। अक्षय=जिसका नाश न हो। विस्मय=आश्चर्य। विश्वपति=ईश्वर। कांचनाभा=सोनेकी सी कान्ति। पर्यटक=भ्रमणकारी, यात्री। पर्याप्त=पूरा। मृगया=शिकार। शैत्य=ठंडक। अमात्य=मन्त्री। श्री=शोभा। कूपमण्डूक=कुएँका मेढ़क। प्रशान्त=विशाल।

२५—सदुपदेश

परमारथ=मुक्ति। मलिन=जड़। समागम=संसर्ग। बाजि=घोड़ा। जवास=हिंगुआ, एक प्रकारका जंगली कँटीदार पौधा।

२६—भारतका दान

अतीत=बीता हुआ। निर्दिष्ट=निश्चित। बर्बर=असभ्य, जंगली। सतीक्ष्ण=तीव्र। प्रतिभा=विचार-शक्ति। कृतित्व=रचनाका भाव। प्रस्फुटित=प्रकट। व्युत्पत्ति=योग्यता, ज्ञान। विषुव=सूर्यके ठीक भूमध्य रेखाके सामने पहुँचनेका समय। अवगत=जानकार। आलोचना=किसी वस्तुके गुण-दोषपर विचार करना।

२७—बाल भावना

नवनीत=मक्खन। घुटुरुन=घुटनेके बल। रेनु=धूल। मधुपगन=भौंरे। कल्प=युग। रहै=रहे। पेखत=देखत। अँधवारि=आँधी। कनियाँ=गोद। दधिदनियाँ=हाँडी, दही रखनेका पात्र। जुठनियाँ=जूठन। बेनी=चोटी। ओटति=ऊँची करती है। भ्वै=जमीनपर।

२८—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रखर=तीक्ष्ण, तेज। पैतृक=बापदादोंकी। सम्पन्न=धनी। जिन्दादिली=सजीवता। पद्म=कमल। नज़र=भेंट। हिबानामा=दानपत्र। दरियादिल=उदार। हज़रत=महाशय। गुनग्राही=गुनग्राहक। नेह=प्रेम।